सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 13 ▪ ▪ अंक : 12-1 ▪ ▪ 5 अप्रेल 2015 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

परम पूज्या पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका, दक्षिण प्रभाविका, गणरत्ना गणिनी पद विभूषिता गुरुवर्या

श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. के

70 वें वर्ष प्रवेश पर (वैशाख वदि 3)

हार्दिक अभिनंदन...अभिवंदन

आपके जीवन में खुशियों की रंगोली सजे।
ज्ञान का दीप जलता रहे, जीवन गुलशन महके।।
आरोग्यता का थाल सजे, जन-जन में आपका नाम गुंजे।
जन्म दिवस की पावन वेला में, सकल संघ हर्षे ।।

मारवाड़ फलोदी की धन्य धरा पर
जन्म हुआ मंगल वेला में
धन्य हो भाग्य हमारे
बधाई इस पावन वेला में

परम गुरू भक्त

पारसमल प्रदीप कुमार गुलेच्छा

रतनाबाई गुलेच्छा

विरंजीपुरम्, जि. वैलूर (तमिलनाडू)

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा ।
ते जाणमजाणं वा, न हणे नो वि घायए ॥

इस लोक में जितने त्रस और स्थावर जीव हैं उन का जाने-अनजाने में साधक हनन न करे और न कराए।

Knowingly or unknowingly one should not kill animate or inanimate living beings in this world and should not cause them to be killed by others either.

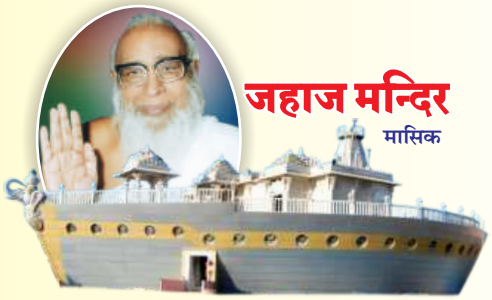

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्रीमज्जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 12-13 अंक : 12-1 5 अप्रेल 2016 मूल्य 20 रू.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	04
2. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	05
3. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	07
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	08
5. गणिनी पद की शास्त्रियता	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	10
6. आनन्द श्रावक	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	12
7. बही आनंद की बहार	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	14
7. जीवन का अन्तिम लेख : मृत्यु	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	16
8. समाचार दर्शन	संकलन	17-50
9. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-117	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	51
10. जहाज मंदिर पहेली 115 का उत्तर		53
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा.	54

खरतरगच्छ की शास्त्रीय परम्परानुसार आगामी पर्व

नवपद ओली प्रारंभ
गुरुवार 14 अप्रेल 16

महावीर जन्म कल्याणक
मंगलवार 19 अप्रेल 16

पाक्षिक प्रतिक्रमण
बुधवार 20 अप्रेल 16

नवपद ओली समापन
शुक्रवार 22 अप्रेल 16

अक्षय तृतीया
सोमवार 9 मई 16

संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	: 7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	: 3,500 रूपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	: 3,000 रूपये
सामान्य आधा पृष्ठ	: 1,500 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

जीवन ऊर्जा का भण्डार है। हमने बहुत ऊर्जा के साथ जन्म लिया है। अपनी क्रियाओं के द्वारा लगातार हम ऊर्जा का व्यय करते हुए इस महान् कोश को कम कर रहे हैं।

एक समझदार व्यक्ति धन का व्यय बहुत सोच समझ कर.. ठोक बजा कर करता है। एक पैसा भी व्यर्थ नहीं जाना चाहिये, यह उसका लक्ष्य होता है।

ऐसा चिंतन हम अपनी ऊर्जा के संदर्भ में नहीं करते। नकारात्मक विचारों में हमारी ऊर्जा अधिक नष्ट होती है। विरोध में मन की रूचि है। क्योंकि विरोध बहुत आसान होता है।

सच्चाई यह है कि हमें मात्र विरोध में रस है। विरोध का विषय तो मात्र बहाना होता है। विरोध का निर्णय करते समय हम विषय को बाद में देखते हैं, व्यक्ति को पहले!

हमारा विरोध विषय से न होकर व्यक्ति से होता है। मारवाडी कहावत के अनुसार मुंह देख कर टीका निकालना, हमारा स्वभाव बना हुआ है। यह हमारी स्वार्थ-परक मानसिकता का परिचायक है।

किसी व्यक्ति के कार्य के प्रति अपनी नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करना आसान होता है। क्योंकि उस विषय में और कुछ करना नहीं पडता।

इस नकारात्मक दृष्टिकोण, खींचतान और रस्साकसी में कार्य बिगड जाता है। बाद में उस कार्य को सुधारना बहुत मुश्किल होता है। क्योंकि उसमें समय और क्षमता का पूरा भोग देना होता है।

नकारात्मक दृष्टिकोण से व्यक्ति की छवि नकारात्मक बनती है। वह सर्व-स्वीकार्य नहीं हो पाता। जबकि सकारात्मक विचारों वाला व्यक्ति हर क्षेत्र में प्रगति की ऊँचाईयों को प्राप्त करता है।

नकारात्मक व्यक्ति सदा बुझा बुझा या आक्रोश के भावों में ही नजर आता है। जबकि सकारात्मक विचारों वाला व्यक्ति न केवल प्रसन्न रहता है, वरन् अपने विचारों के आधार पर पूरे वातावरण को खुशनुमा बना देता है।

प्रीत की रीत

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री श्रेयांसनाथ स्तवन

निज ज्ञाने करी ज्ञेय नो,
ज्ञायक ज्ञाता पद ईश रे।
देखे निज दर्शन करी,
निज दृश्य सामान्य जगीश रे, मु. ॥२॥

हे प्रभु! आप अपने ज्ञान के द्वारा समस्त जानने योग्य पदार्थों के ज्ञाता है। यह आपके केवलज्ञान की महिमा है। दर्शन गुण के द्वारा देखने योग्य समस्त पदार्थों के दृष्टा है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी प्रभु की विशिष्ट उपलब्धि का अहोभाव से विवेचन कर रहे हैं। श्रीमदजी यद्यपि जानते हैं कि प्रभु की सर्वज्ञता के समक्ष मेरा ज्ञान एक प्रकार से बिन्दु में सिंधु है। पर उन्हें इस बात की भी प्रतीति है कि यद्यपि सिंधु के समक्ष बिंदु का कोई वक्त नहीं है। पर यह भी उतना ही सत्य है कि बिंदु अगर समुद्र में समा जाय तो वह भी महामूल्यवान् सिंधु का परिचय पा लेता है। परम प्रभुता को उपलब्ध परमात्मा के समक्ष यद्यपि आत्मा के सामान्य ज्ञान की कोई महत्ता नहीं है परंतु यह भी सत्य है कि आत्मा अगर प्रभु की प्रभुता के प्रति आकृष्ट हो जाय, उन्हें पाने का पुरूषार्थ प्रारंभ कर दे तो एक दिन वह भी सामान्य से विशिष्ट कोटि में आ जाती है। श्रीमद्जी का लक्ष्य परमात्मा की उपलब्धि है और इस उपलब्धि के लिये ही वे कभी उनकी प्रभुता, कभी उनकी करूणा और कभी उनकी वीतरागता का गान करते हैं।

जैन दर्शन ने ज्ञान का अद्भुत वर्गीकरण किया है। इस वर्गीकरण को हम समझें। बुद्धि के द्वारा चेतना को जो ज्ञान होता है, वह मतिज्ञान कहलाता है और सुनने से जो ज्ञान उपलब्ध होता है, वह श्रुतज्ञान है। इन दोनों ज्ञानों का आगमन इन्द्रियों के द्वार से होता है। यह ज्ञान की प्रारंभिक अवस्था है। इन दोनों ज्ञानों को कोई सामान्य पंडित भी उपलब्ध हो सकता है। विद्यालय, विश्विद्यालय, शास्त्र आदि के द्वारा जो भी ज्ञान पाया जाता है, वह सारा इन उपरोक्त ज्ञानों में समाविष्ट हो जाता है। इन ज्ञानों में स्वयं का कोई अनुभव नहीं होता। यह सारा एक प्रकार से उधार का ज्ञान है।

बाद के तीनों ज्ञान इन्द्रियातीत ज्ञान है। इन तीनों की प्राप्ति साधक अवस्था के दौरान ही होती है। पूर्वोक्त दोनों ज्ञान में मन और इन्द्रियों की सहायता अपेक्षित है जबकि अंतिम तीन ज्ञान अवधि, मन:पर्यव और केवलज्ञान में मन और इन्द्रियों की सहायता अपेक्षित नहीं होती। यह अवधिज्ञान जन्मजात भी होता है और साधना के द्वारा भी प्रकट होता है। नारक और देवों को जन्मजात होता है। जबकि मानव और तिर्यंचों को साधना आदि द्वारा उपलब्ध होता है। अवधि ज्ञान के द्वारा सभी प्रकार के पुद्गल ग्रहण किये जाते हैं और वे भी मात्र पर्याय रहित! अवधि ज्ञान का क्षेत्र अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर सारा लोक है।

चौथे मन:पर्यव ज्ञान के द्वारा दूसरों के मन में उठती विचार तरंगो को जो कि आकृति का रूप धारण कर लेती है, उन्हें पकड लिया जाता है। मानसिक पर्यायों को जानने के कारण इसे मन:पर्यव ज्ञान कहते हैं। जिस प्रकार मनौवैज्ञानिक किसी का चेहरा या हाव भाव देखकर उसके मनोगत भावों की कल्पना कर लेता है, वैसे ही मन:पर्यव ज्ञानी भी किसी के मानसिक विचारों को जान लेता है। मन:पर्यव ज्ञान अवधिज्ञान की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और अधिक सूक्ष्म होता

है। पर यह जरूर ध्यान रखना है कि यह भी रूपी अथवा मूर्त्त द्रव्यों का ही साक्षात्कार कर सकता है। अर्थात् मात्र पुद्गल को ही ग्रहण करता है। परन्तु पीछे होने वाले अनुमान के द्वारा मानसिक चिंतन मे आये हुए मूर्त्त अमूर्त्त सभी द्रव्य जाने जा सकते हैं।

सर्वोत्कृष्ट ज्ञान है केवलज्ञान! यह रूपी अरूपी सभी द्रव्यों की भूत, वर्तमान और भविष्यकालीन पर्यायों को पकड सकता है। यह ज्ञान चैतन्य के विकास का अन्तिम बिन्दु है। कोई भी द्रव्य ऐसा नही जो अपनी समस्त पर्याय सहित इसमें न झलकता हो।

परमात्मा सर्वोत्कृष्ट ज्ञान के स्वामी है। इस ज्ञान संपदा को पाने के बाद पूर्व के चारों ज्ञान स्वत: इसी में विलीन हो जाते हैं। इस ज्ञान संपदा के स्वामी होने के कारण वे समस्त जानने और देखने योग्य पदार्थों के द्रष्टा है। ज्ञाता द्रष्टा के इस गुण में भी तीनों ही परिणमन है। जैसे देखने योग्य पदार्थ को देखना कार्य है, दर्शन गुण कारण है और देखने की प्रवृत्ति को करने वाली आत्मा कर्त्ता है।

निज रम्ये रमण करो,
प्रभु चारित्रे रमता राम रे।
भोग्य अनंत ने भोगवो,
भोगे तेणे भोक्ता स्वाम रे, मु. ॥३॥

हे परम में रमण करने वाले राम! आपको अपनी आत्मा में रमणता ही प्रिय हैं। स्वयं के चारित्र में रमण करने वाले आप स्वयं राम है। भोगने योग्य गुणों को भोगना ही आपको अच्छा लगता है। आप अपने ही भोक्ता है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने प्रभु की स्वरमणता बताते हुए नेपथ्य से संपूर्ण सृष्टि की ओर संकेत किया है कि स्वयं में रहना सबसे उत्कृष्ट आनन्द है। अन्य जितने भी सुख है, वे सारे पराश्रित है। शरीर और इन्द्रियों की गुलामी से उपजा सारा सुख क्षणिक है। इस सुख के साथ सदैव पराधीनता, परवशता, जडता, मूढ़ता आदि समस्त दु:ख ऐसे जुडे हुए हैं जैसे शरीर के साथ उसकी छाया। जिन वस्तुओं में बसन्त की बहार नजर आती है उन्हीं के पीछे पतझड की शून्यता व्याप्त है। जितना भी सर्जन है, उसके पीछे विसर्जन की सत्यता तो झांकती ही है। बाहर के सुखों को संभालने का जितना भी प्रयत्न किया जायेगा, उतना ही अधिक तीव्रता से वह छूटता जायेगा। लाख उपाय करें बाहर से सुख पकडने का पर पकड नहीं पायेंगे। सुख हमारे अन्दर में है। लोग चांद-तारों पर उतरने की चिंता करते हैं परंतु स्वयं के भीतर की यात्रा करना आवश्यक नहीं समझते। बाहर में रमना व्यर्थ है अन्तर में झांके क्योंकि सुख जीव का स्वभाव है, वस्तुओं का नहीं। अत: वह वहीं खोजने से मिलेगा। भीतर में जब रमणता होती है तो आनंद के झरणे फूट पडते हैं। आंतरिक रमणता से मात्र हम ही नहीं, सृष्टि को भी आनंद उपलब्ध करवा सकेंगे। हमारी आँखें बाहर टिकी है। जितना समय, जितनी ऊर्जा हमने बाहर रमने में लगाई, उसे स्वरमणता में लगाते तो हमारे अस्तित्व का विशाल साम्राज्य हमें उपलब्ध हो जाता। जिसकी अंतर्यात्रा सफल हो जाती है, उसकी बहिर्यात्रा भी सार्थक हो जाती है। क्योंकि फिर वे ही आँखें भीतर के आनंद रस को लेकर जब बाहर घूमेगी तब उसे वहाँ भी आनंद और सुख नजर आयेगा।

श्रीमद्जी प्रभु को अपने ही आत्मधर्म में रमण करते देखकर कहते है कि आपको तो बस! अपना आत्मा धर्म ही रमने योग्य नजर आता है। भोगने योग्य भी अपनी स्वयं की आत्म संपदा नजर आती है। यह भोग ऐसा है, जिसमें पल-पल की क्षीणता को अवकाश नहीं है। यह भोग निरंतर नूतन ही नजर आता है। यहाँ चारित्र गुण करण है, रमणता कार्य है और चारित्र गुण की प्रवृत्ति क्रिया है। उसी प्रकार भोग गुण करण, भोगने योग्य संपदा को भोगना कार्य और भोग गुण की प्रवृत्ति क्रिया है।

प्रस्तुत पद्य में जैन दर्शन का यह सिद्धान्त भी प्रतिपादित हुआ कि कर्त्ता और भोक्ता अलग-अलग न होकर एक ही होते हैं। कुछ दार्शनिकों की यह मान्यता है कि कर्त्ता और भोक्ता भिन्न है। अगर कर्त्ता और भोक्ता को भिन्न माना जाय तो भोक्ता क्यों किसी अन्य के परिणाम को भोगेगा। और कर्त्ता को अगर अपने शुभ और अशुभ का परिणाम नहीं मिलेगा तो क्यों वह शुभ क्रिया के प्रति उत्साहित होगा और क्यों अशुभ से निवृत्त होगा।

(क्रमश:)

34
श्रमण चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

संयम में देवलोक: असंयम में नरक

- संयम अमृत है और असंयम जहर है।
- संयम बाग है और असंयम नाग है।
- संयम फूल है और असंयम शूल है।

देवलोग समाणो अ, परिआओ महेसिणं।
रयाणं अरयाणं च, महानरय सरिसो।।10।।

अर्थात् संयम में रत श्रमण का जीवन स्वर्ग तुल्य और अरत का जीवन महानरक तुल्य होता है।

चूलिका का उपरोक्त दसवाँ श्लोक संयम और असंयम, दोनों के संदर्भ में है।

जो मुनिवर संयम में रत रहते है, उनका संयम देवलोक के दिव्य सुख के तुल्य प्रतीत होता है। आगमों में तो यहाँ तक कहा गया कि जो मुनि निरतिचार, निर्दोष और निर्मल चारित्र का पालन करते हुए आत्मा की गवेषणा में रत रहते हैं, उन प्रज्ञावंतों के बारह माह के चारित्र पालन से उत्पन्न सुख अनुत्तर विमान के देवों के सुख से भी अधिक श्रेष्ठ और श्रेयस्कर होता है।

सनत्कुमार का जीवन देखे तो प्रतीत होगा कि शरीर में सोलह रोग उत्पन्न होने के बाद भी शरीर की सेवा का यत्किंचित भाव नहीं हुआ, क्योंकि वे आत्म ध्यान में अनुपम और अनुत्तर सुख की अनुभूति प्रतिक्षण किया करते थे, अतः शरीर के तुच्छ सुख की उन्हें कोई भूख नहीं थी।

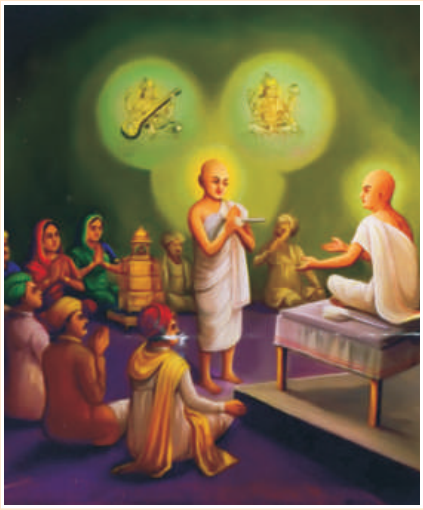

इससे विपरीत जिस मुनि को कुलवालुक मुनि की भाँति संयम भारभूत, निरस और शुष्क लगता है तथा भोगों की भूख सताती रहती है, उसके लिये वो ही संयम नरक तुल्य पीडाकारी, कठोर और दु:खप्रद बन जाता है।

मुनिवर! संसार के सारे काम भोग निम्न हैं, थाली के झूठन के समान हैं, तुच्छ और त्याज्य हैं, उनके लिये आदर्श संयम के अदभुत सुख का त्याग मत कर।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित -
राहुल ए. संघवी - 9408395557, 8735039456
• तमन्ना प्रेजेन्ट्स
• राहुल इवेण्ट
अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, नव्वाणुं, चातुर्मास, संगीत संध्या, गजल, गरबा, मैजिक शो, ड्रामा आदि हर प्रकार के आयोजन में पूर्ण सेवाऐं प्रदान करने के अनुभवी
106, सांई कृपा सोसायटी, अमित नगर के पास, कारेली बाग, बड़ोदरा (गुजरात)

43
संस्मरण

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

वार्तालाप को आगे बढाते हुए पूज्यश्री ने कहा- दीक्षा तो पुनः होनी ही थी। क्योंकि तेरापंथ को छोडे दो वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो चुका था। फिर रजोहरण भी मेरे पास न था। अतः मुनि जैसा जीवन व्यतीत करने पर भी मैं अपने आपको मुनि तो नहीं कह सकता था।

वार्तालाप को आगे बढाते हुए पूज्यश्री ने फरमाया- दीक्षा लेने के बाद मेरा पहला चातुर्मास पूज्य गुरुदेवश्री जिनहरिसागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य श्री कवीन्द्रसागरजी म. आदि मुनि भगवंतों के साथ अनूपशहर में हुआ।

पढाई प्रारंभ हुई। पूज्यवर पढाते। उन दिनों पंडित रखकर पढाने का रिवाज नहीं था। आगम, तत्वज्ञान के बहुत सारे थोकडे तो मेरे पहले से ही सिखे हुए थे। तेरापंथ में जो पढाई हुई थी, वह मेरे बहुत काम आई। उस समय में तेरापंथ में संस्कृत पढने का वातावरण नहीं था।

पूज्यश्री की सन्निधि में संस्कृत व्याकरण पढना प्रारंभ किया। लघु सिद्धान्त कौमुदी के सूत्र-स्मरण और उनकी साधनिका की सिद्धि प्रारंभ हुई।

तत्वज्ञान अच्छा था। गुरुदेवश्री ने कहा- कान्ति! अपने यहाँ प्राकृत गाथाऐं याद करके उनका अर्थ करने की परम्परा है। थोकडे याद करने की परम्परा नहींवत् है। इसे अब व्यवस्थित करना है। इससे बाल जीवों पर बडा उपकार होगा। वे थोडे में ज्यादा सीखेंगे।

पैंतीस बोल के थोकडे की पुस्तक लिखो। सामान्य विवेचना करो। गुरुदेव का आदेश स्वीकृत हुआ। कुछ ही दिनों में पुस्तक तैयार हो गई। उस समय यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध हुई।

अनूपशहर के बाद लखनउ, कोलकाता, अजीमगंज, जयपुर, नागोर, बीकानेर ये चातुर्मास मेरे लिये बहुत उपलब्धि वाले रहे। गुरुदेवश्री मुझसे प्रवचन दिलवाते। कण्ठ मेरा मधुर था ही! बहुत सारी ढालें मुझे याद थी। उनमें कई महापुरूषों के जीवन कथानक थे।

कविता लिखने में भी मुझे रस था। मैंने कई छोटे स्तवन लिखे। पूज्य गुरुदेवश्री मुझे प्रोत्साहित करते। गल्तियां भी बताते। धीरे धीरे रचनाओं में निखार आने लगा।

वि. सं. 1995 का चातुर्मास बीकानेर में हुआ। बीकानेर के इस चातुर्मास में तपस्या का वातावरण चल रहा था। अन्य मुनि भगवंत भी तपस्या का संकल्प कर रहे थे। तब मेरा मन भी तपस्या करने का हुआ। शरीर तपस्या के अनुकूल न था। चातुर्मास प्रारंभ हुआ ही था। मेरे मन में अभिग्रह धारण करने की इच्छा हुई। गुरुदेव ने कहा- रहने दे, तेरे से नहीं

होगा। अभिग्रह नहीं फला तो तपस्या करनी पड़ सकती है। मैंने कहा- मेरा संकल्प मजबूत है। मैंने अभिग्रह धारण कर लिया। गुरुदेवश्री से आदेश प्राप्त कर अभिग्रह लिया कि कोई श्राविका राख लेने का निवेदन करे तो पारणा करना, अन्यथा उपवास करना।

अभिग्रह लेकर दोपहर के समय में मैं मौन पूर्वक गोचरी जाने लगा। मेरे मौन को देख कर लोग समझ गये कि मैंने अभिग्रह धारण किया है। सभी दूध, दही आदि वस्तुओं के लिये निवेदन करते, पर किसी ने भी राख के लिये नहीं कहा!

तीन दिन बीत गये। तीन उपवास हो गये। चौथे दिन उसी समय मैं गोचरी के लिये चल पडा। वो ही समय... वो ही घर... वे ही श्रावक और श्राविकाऐं!

दसेक घर घूमने के बाद एक घर में गया। श्राविका आगेवान थी। साधु साध्वियों के प्रति वात्सल्य भावों से परिपूर्ण वह श्राविका थी। उसने तरह तरह के द्रव्यों को ग्रहण करने हेतु निवेदन किया। मैंने सिर हिलाकर मना किया।

उसकी क्षुब्धता आक्रोश में बदली। वह बोली- गुरु महाराज! आप रोज आते हैं और खाली हाथ चले जाते हैं। आपको क्या पता- जब आप खाली जाते है।... हमें लाभ नहीं मिल पाता... तब हमारा हृदय कितना छलनी छलनी हो जाता है! आपको दूध नहीं चाहिये... मूंग नहीं चाहिये... खाखरा नहीं चाहिये... तो क्या राख चाहिये!

मैं बोल पडा- हाँ बहिन! राख चाहिये! लोच का समय आने वाला है, उसके लिये राख चाहिये। यही मेरा अभिग्रह था। अभिग्रह फल गया।

हम अचरज से इस प्रसंग को सुन रहे थे। घटना जब सुना रहे थे, तब बीच में मेरे मन में सवाल करने का विचार आया! पर घटना इतनी विस्मयवाली थी कि बीच में सवाल न कर सका।

मैंने कहा- गुरुदेवश्री! अभिग्रह तो बहुत लेते हैं। पर राख का अभिग्रह! ये तो पुण्य था कि पूरा हो गया। अन्यथा राख के लिये कौन निवेदन करेगा!

गुरुदेवश्री के चेहरे पर स्मित छा गया। उन्होंने कहा- मैं भी समझता था। गुरुदेवश्री ने कहा भी था। पर मेरे मन में कुछ नया करने का था। फिर मैंने सोचा- योग होगा तो राख का भी निवेदन हो जायेगा। और योग नहीं होगा तो सामान्य वस्तु का निवेदन भी याद नहीं आयेगा।

(क्रमशः)

गणिनी पद की शास्त्रीयता

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

परमात्मा महावीर की शासन व्यवस्था बड़ी अनूठी है। शासन के तंत्र को सुव्यवस्थित रूप से संचालित करने के लिये शास्त्रकारों ने मुनियों व साध्वियों के लिये विभिन्न पदों का सर्जन किया है।

आचार्य, उपाध्याय, अनुयोगाचार्य, पंन्यास, गणी, प्रवर्तक, स्थविर, गणावच्छेदक आदि पद मुनियों को उनकी योग्यतानुसार प्रदान किये जाते हैं। इसी प्रकार श्रमणी–समुदाय की व्यवस्था के लिये साध्वियों को महत्तरा, प्रवर्तिनी, गणिनी, अभिषेका, प्रतिहारी आदि पद प्रदान कर जिम्मेदारी प्रदान की जाती है।

अभी पालीताना में संपन्न हुए खरतरगच्छ साधु–साध्वी सम्मेलन में सर्वसम्मति से आचार्य, उपाध्याय, गणी, महत्तरा, प्रवर्तिनी एवं गणिनी पद प्रदान करने का निर्णय हुआ। तदनुसार ता. 11 व 12 मार्च को पदारोहण संपन्न हुए।

आचार्य आदि पदों के संबंध में कोई उहापोह नहीं हुआ, गणिनी पद के संदर्भ में काफी जिज्ञासाऐं प्रकट हुई। साधु–साध्वियों में ही नहीं, श्रावक–श्राविकाओं में भी काफी प्रश्न उपस्थित हुए।

गणिनी पद क्या है?पहले कभी सुना नहीं?नये पद का सृजन किया है क्या?आदि आदि काफी प्रश्न व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से पूछे गये। हमने शास्त्रीय आधार पर सभी को उत्तर दिये।

जिस प्रकार महत्तरा, प्रवर्तिनी आदि पद शास्त्रीय है, उसी प्रकार गणिनी पद भी पूर्ण रूप से शास्त्रीय है। दिगम्बर समाज में प्रमुख आर्यिका को गणिनी पद प्रदान करने की परम्परा आज भी प्रारंभ है। जबकि खरतरगच्छ में गणिनी पद प्रदान करने की परम्परा पूर्व में विद्यमान थी। पिछले सौ–सवा सौ वर्षों के इतिहास में यह पद पहली बार प्रदान किया गया है।

देखें– शास्त्रों में इस संबंध में क्या उल्लेख है?

बृहत्कल्पभाष्य की 6112 वीं गाथा की टीका में लिखा है–

गणिनी प्रवर्तिनी सा भिक्षु सदृशी मन्तव्या।।

इस भाष्य के अनुसार गणिनी को प्रवर्तिनी सदृश माना है।

जिस प्रकार मुनियों में गणी पद की महत्ता है, वही महत्ता साध्वियों में गणिनी पद की है। शास्त्रों के अनुसार गणी पद अत्यन्त योग्य, बहुश्रुत मुनि को प्रदान किया जाता है। शास्त्र कहते हैं कि सामान्य साधु आचार्य, उपाध्याय या वाचनाचार्य के पास अध्ययन करता है। पर कभी ऐसी परिस्थिति आ गई हो कि योग्यता, प्रभावकता आदि देखकर लघुपर्यायी मुनि को लघु वय में आचार्य या उपाध्याय पद प्रदान कर दिया हो और अभी उसका अध्ययन भी चल रहा हो तो शास्त्रों के अनुसार आचार्य या उपाध्याय किसी सामान्य श्रमण से अध्ययन नहीं कर सकता। वह गणी के पास ही अध्ययन कर सकता है। इस आधार पर आगमों में गणी पद की बहुत प्रतिष्ठा है। गणी बनने वाला व्यक्तित्व अत्यन्त गंभीर, विनयी व विद्वान् होता है।

गणी पद की परिभाषा के अनुसार गणिनी पद की जिम्मेदारी को समझा जा सकता है। महत्तरा, प्रवर्तिनी आदि को अध्यापन करवाना गणिनी का मुख्य कर्त्तव्य है।

गच्छाचार पयन्ना की 127–128वीं गाथा में गणिनी की योग्यता व कर्त्तव्यों का वर्णन है–

समा सीस पडिच्छीणं चोअणासु अणालसा। गणिणी गुणसंपन्ना पसत्थपुरिसाणुगा।।
संविग्गा भीय परिसा य उग्गदंडा य कारणे। सज्झायज्झाण जुत्ता या संगहे अ विसारआ।।

–गणिनी पद को धारण करने वाली श्रमणी में अनेक गुणों व योग्यताओं का होना आवश्यक था। वह

अत्यन्त विदुषी तथा प्रशासनिक कार्यों में दक्ष होती थी। यद्यपि वह स्वाध्याय तथा ध्यान में सदा लीन रहती थी तथापि जिनशासन की रक्षा का प्रश्न उपस्थित हो जाने पर वह उग्र रूप धारण कर लेती थी। शिक्षा प्रदान करने में वह किसी प्रकार का प्रमाद या आलस्य नहीं करती थी। गणिनी को गुणसंपन्न कहा गया है। वह संघ की मर्यादा की रक्षा में सदा तत्पर रहती थी तथा साध्वियों की संख्या में वृद्धि का सतत प्रयत्न करती थी।

खरतरगच्छ के इतिहास में सबसे पहला गणिनी पद खरतरबिरूद धारक आचार्य जिनेश्वरसूरि के समय में उनके द्वारा प्रदान किया गया। यह पद साध्वी मरूदेवी को प्राप्त हुआ। खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावली के अनुसार आचार्य जिनेश्वरसूरि विहार करते हुए जब डिण्डीयाणा पधारे। वहॉ गणिनी मरूदेवी ने अनशन स्वीकार किया था। उनके अंतिम काल में आचार्यश्री साध्वीजी के उपाश्रय में पधारे तथा अंतिम आराधना करवाई। आचार्यश्री ने कहा– आर्ये! अपने निर्दोष संयम जीवन के परिणाम–स्वरूप आप देवलोक में ही जाओगी। आप बाद में अवश्य सूचित करना।

गणिनीजी ने तहत्ति कहकर उनकी आज्ञा शिरोधार्य की। पूज्य आचार्यश्री आराधना करवाते.. समाधि प्राप्त कर चालीस दिन के अनशन के पश्चात् देवलोक सिधार गये।

कुछ ही समय बाद गणिनी मरूदेवी ने पूज्य आचार्यश्री की सेवा में ब्रह्मशांति यक्ष के माध्यम से संदेश भेजा–

मरूदेवि नाम अज्जा गणिणी जा आसि तुम्ह गच्छम्मि।
सग्गम्मि गया पढमे, देवो जाओ महिड्ढओ।।
टक्कलयम्मि विमाणे दुसागराओ सुरो समुप्पन्नो।
समणेस सिरिजिणेसरसूरिस्स इमं कहिज्जासु।।
टक्कउरे जिण्वंदण निमित्तमिहागएण संदिट्ठं।
चरणम्मि उज्जमो मे कायव्वो किं व सेसेसु।।

खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावली की इन गाथाओं में मरूदेवी साध्वी के लिये गणिणी पद का संबोधन है। खरतरगच्छ के इतिहास में इस प्रकार के उदाहरण विशेष रूप से उल्लिखित हैं। जिनपालोपाध्याय द्वारा रचित खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावली के पृष्ठों पर गणिनी पद प्रदान एवं उसके बाद उन्हें प्रवर्तिनी पद प्रदान की घटनाऐं प्राप्त होती है।

गुर्वावली के अनुसार वि. 1278 ज्येष्ठ सुदि 12 को चारित्रमाला गणिनी, ज्ञानमाला गणिनी व सत्यमाला गणिनी की दीक्षा संपन्न हुई। वि. 1280 में पूर्णश्री गणिनी व हेमश्री गणिनी की दीक्षा हुई। सं. 1283 माघ वदि 2 को बाडमेर में मंगलमति नामक गणिनी को प्रवर्तिनी पद प्रदान किया गया। गुर्वावली में 13वीं शताब्दी में उदयश्री गणिनी, कुलश्री गणिनी, प्रमोदश्री गणिनी, विनयमति गणिनी, विद्यामति गणिनी, चारित्रमति गणिनी, राजीमति गणिनी, हेमावली गणिनी, कनकावली गणिनी, रत्नावली गणिनी, मुक्तावली गणिनी, शीलसुन्दरी गणिनी आदि की दीक्षाओं का वर्णन प्राप्त होता है।

वि. 1310 में वैशाख सुदि 13 को जालोर नगर में प्रमोद श्री गणिनी को महत्तरा पद देकर लक्ष्मीनिधि नाम प्रदान किया, साथ ही ज्ञानमाला गणिनी को प्रवर्तिनी पद प्रदान किया। वि. 1375 माघ शुक्ल 12 को नागपुर में जिनकुशलसूरि द्वारा धर्ममाला गणिनी एवं पुण्यसुन्दरी गणिनी को प्रवर्तिनी पद प्रदान किया।

इस प्रकार के सैंकडों वर्णन खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावली में उपलब्ध हैं। खरतरगच्छ की परम्परा में महत्तरा, प्रवर्तिनी एवं गणिनी तीनों पद प्रदान का वर्णन प्राप्त होता है। पिछले कुछ समय से गणिनी पद की व्यवस्था नहीं थी। वर्तमान में पालीताना में संपन्न हुए खरतरगच्छ साधु साध्वी सम्मेलन में गणिनी पद प्रदान करने का निर्णय किया गया। तदनुसार साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. को महत्तरा एवं साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. को प्रवर्तिनी पद प्रदान के साथ साथ साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. एवं साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. को गणिनी पद से विभूषित किया गया।

दस महाश्रावक

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

1– आनंद श्रावक

(गतांक से आगे)

नहीं आनंद! कहीं न कहीं त्रुटि हो रही है तुमसे। तुम्हें मिथ्या दुष्कृत देना चाहिये असत्य भाषण के लिये।

श्रमण श्रेष्ठ! मैं एक प्रश्न करना चाहता हूँ यदि आप अनुज्ञा दे तो।

इसमें निषेध को स्थान कहाँ? जरूर अपनी जिज्ञासा को समाहित करो।

ज्ञानी गुरुवर! 'मिच्छामि दुक्कड़म्' देने का अधिकारी कौन? सत्यभाषी अथवा असत्यभाषी?

गौतम स्वामी बोले– आनंद! तुम भी बालकवत् कितने भोले हो। सत्यभाषी भला किस कारण मिथ्यादुष्कृत देगा? उसका प्रावधान तो मृषा भाषी के लिये है। ठीक वैसे ही, जैसे शुद्धिकरण मलिन के लिये आवश्यक है, अमल–निर्मल के लिये नहीं।

करबद्ध विनयावनत हो आनंद ने कहा– तो फिर भगवन्! प्रायश्चित्त का अनुभागी मैं नहीं।

आनन्द ने जिस दृढता के साथ निवेदन किया था, उससे गौतम स्वामी संशयग्रस्त हो संकट में पड़े– तो क्या मुझे प्रायश्चित्त करना चाहिये?

मैं अभी जाता हूँ और प्रभु से समाधान प्राप्त करता हूँ।

यद्यपि गौतम स्वामी स्वयं चार ज्ञान के स्वामी थे। यदि वे उपयोग लगाते तो अवश्यमेव यथार्थ जान पाते परन्तु उनके लिये परमात्मा ही सर्वस्व थे। तुरन्त विहार कर वे पहुँचे प्रभु की शरण में।

भगवान तो सर्वज्ञ थे। केवलज्ञान के अनन्त आलोक में बिम्बित थी यह घटना!

गौतम स्वामी चरण–वन्दनापूर्वक आनन्द के साथ जो वार्तालाप हुआ था, वह निवेदित किया।

प्रभु बोले– गौतम! आनंद ने कहा है, वह अक्षरशः सत्य है। उसमें कहीं भी शंका को स्थान नहीं है।

तुम यदि ज्ञानोपयोग लगाते तो अवश्य ही जान जाते। असत्य भाषी तुम हो, आनंद नहीं। तुरन्त जाओ और मिथ्यादुष्कृत करके मृषावाद के दोष का परिहार करो।

उल्टे पाँवों सरल बाल की भाँति पहुँच गये गौतम स्वामी आनंद श्रावक के घर। वस्तुतः ज्ञान वह है, जो अहंकार और ममकार को बढ़ाता नहीं अपितु चेतना में सरलता तथा समर्पण के नये प्राण प्रतिष्ठित करता है।

गौतम स्वामी ने अपने शब्दों में क्षमायाचना के फूल पिरोते हुए कहा– श्रावक श्रेष्ठ ! प्रभु से मैंने यथार्थ ज्ञान पा लिया है। जो तुमसे मिथ्यावचन कहा, तदर्थ मेरे मन में गहरा अनुताप है।

श्रमण होकर मुझे इस प्रकार नहीं कहना चाहिये था। मैं तुमसे क्षमा माँगता हूँ।

गौतम स्वामी की निश्छलता देख आनंद ही नहीं, बल्कि हर व्यक्ति अचंभित था।

उनके मुख से 'मिथ्यादुष्कृत' शब्द श्रवण कर आनंद बोला– निस्पृह शिरोमणे। यह आप क्या कर रहे हैं?

गौतम स्वामी बोले– श्रावक श्रेष्ठ! श्रमणचर्या की साधना यह मेरा धर्म है। इस धर्म में न पद बाधक बन सकता है, न श्रुत–वैभव।

जनसमूह द्विधा में था। किसकी करें प्रशंसा, किसके गाये प्रशस्ति गीत?

प्रथम गणधर की भूल को भूल रूप में प्रकट करने

वाले आनंद की दृढ़ता की प्रशंसा करें अथवा गणाधिपति एवं चरम तीर्थंकर के परम शिष्य होने पर भी गुर्वाज्ञा शिरोधार्य कर मिच्छामि दुक्कड़म् करने वाले श्रमण श्रेष्ठ की प्रशस्ति गाये?

फुहारे बरसने लगी जीवन के आतप में। मानवमेदिनी उमड़ने लगी दिन प्रतिदिन आनंद के गृहाँगन में। उसकी समता, साधना और तप का तेज बढ़ता रहा। उसकी ख्याति दूज-चंद्रवत् बढ़ती गयी। सुरपति-नरपति भी आये चरणों की वंदना करके, अनुमोदना का आनंद अभिव्यक्त करने के लिये।

अनशन के एक माह-उपरान्त आयु पूर्णता के साथ आनंद सौधर्म स्वर्ग में महर्द्धिक देव बने। वहाँ चार पल्योपम प्रमाण काल पर्यन्त दिव्य-समृद्धि भोगने के बाद महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर आत्म साधना में प्रयत्नशील बनकर केवलज्ञान प्राप्त करेंगे तथा अन्त में अवशिष्ट अघाती कर्मों का सर्वथा क्षय कर अक्षय आत्म ऋद्धि प्राप्त करेंगे।

कुशल नेतृत्व कर्ता आचार्य वह मजबूत धुरी है, जिसके सहारे चतुर्विध संघ रूप चक्र घूमता हुआ प्रगति करता है। और अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल चरण बढाता है।

आचार्य पदारोहण
पर वंदनाएं
सदैव आशीष
की कामनाएं

शा. तेजराज
सौ. तीजोदेवी
महावीर, हीतेश,
प्रदीप कांकरिया परिवार
गढसिवाणा - हुबली

मेरी अनुभूति

बही आनंद की बहार

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

2016 का मार्च महिना मेरे लिये ही नहीं अपितु सभी खरतरगच्छीय समाज के लिये अत्यंत आल्हादकारी रहा। इस माह की घटनाओं ने खरतरगच्छ में नये प्राण फूंके है। ऐसा लगता हैं जैसे चारों ओर खरतरगच्छ की महिमा गूंज उठी है। साथ ही लगभग दस माह से चल रहे विभिन्न प्रकार के तूफानों सुखद पटाक्षेप भी हो रहा था।

जब मैने गतवर्ष एकदम अनजाने अपरिचित छतीसगढ़ में प्रवेश किया था दूर सुदूर तक किसी प्रकार की कोई समस्या न थी, पर दो माह बाद अचानक जैसे कोई सोया तूफान जागा और शान्त खरतरगच्छ का सागर तरंगित हो उठा। गच्छ में दो आचार्यो के विवाद ने संघ की एकता को विभाजित कर दिया। गच्छनिष्ठ, गच्छ समर्पित, गच्छ के प्रति जागरूक श्रावकों को इस विवाद ने जहाँ दु:खी किया, वहीं मनचले उच्छृंखल एवं विभाजनकारी तत्त्वों को अपना मनचाहा मसाला मिल गया।

इस विवाद ने मिड़िया का भयंकर दुरूपयोग किया। मन इन सब स्थितियों में भयानक रूप से आहत हुआ। लगभग दस माह की इस अवीध में बहुत बार मन हुआ कि इस स्थिति से स्वयं को मुक्त कर दे पर कैसे?मेरा संवेदनशील मन घटना-मुक्त नहीं रह पा रहा था और स्थिति से बचने का भी कोई उपाय न था।

जब मन घटनाओं में डूबता था तब आत्मा का कोना-कोना वेदना से भीग जाता था और ज्योंहि परमात्मा वाणी का पाथेय मिलता था तब मन पुन: अपने शान्त सुधारस में डुबकी लगा लेता था। बस ऐसे ही कभी शान्त तो कभी अशांत स्थिति में डूबता तैरता मन स्थिति को संभालकर आगे की गतिविधि की तैयारी में लग रहा था।

पूज्य गुरूदेव श्री जैसे ही सिंधनूर में 29-5-2015 को गणाधीश के रूप में नियुक्त हुए, उन्होंने अपने समन्वयकारी स्वभाव को अभिव्यक्त करते हुए आगे की समस्त गतिविधियों के लिये सम्मेलन की घोषणा कर दी। उनका स्पष्ट मत था कि अगर व्यवस्था परम्परानुसार आगे बढती हैं तो किसी को पूछने की आवश्यकता नहीं हैं परन्तु अगर व्यवस्था में परिवर्तन होता हैं तो अवश्य ही सभी से पूछा जाना चाहिये!

सम्मेलन की तैयारी बढ रही थी तो कहीं-कहीं विरोध के स्वर भी उठ रहे थे। उनके अपने तर्क थे। इसी पक्ष विपक्ष की चर्चाओं में बहुत बार महसूस हो रहा था कि जो व्यक्ति काम करना चाहता हैं, उस व्यक्ति को कितने-कितने तीखे कांटों की चुभन स्वीकार करके आगे बढना होता है। जिस समय कांटों की चुभन आहत करती हैं, पीड़ा देती है उस समय मन पर संतुलन रखते हुए आगे बढते जाना ही परिणाम देता हैं पर उस वक्त को बीताना.....उस समय के दंश को झेलना कितना पीड़ादायक होता हैं, यह तो मुझसे कोई पूछे!

ऐसा नहीं कि यह सारा घटनाक्रम महाराज श्री को विचलित नहीं करता होगा?हाँ यह हो सकता हैं कि अनुपात कम ज्यादा होगा पर मन को प्रभावित तो करता ही होगा। मेरा मन निसंदेह ज्यादा....बहुत ज्यादा विचलित था। उसका कारण भी था। मुझ तक हर व्यक्ति आसानी से पहुँचता था। कोई भी व्यक्ति इन सब घटनाओं में किसी न किसी रूप में मुझे जोड़ भी लेता था। जिस बात की मुझे जानकारी तक नहीं होती थी, उसमें भी मुझे पता चलता था कि सूत्रधार के रूप में मैं हूँ।

सुनकर मैं अर्चभित होती थी, आहत होती थी पर इससे आगे में कर भी क्या सकती थी?अगर किसी एक व्यक्ति का नाम सहित भ्रम होता तो मै उसे तोडने का प्रयास करती पर नाम किसी का होता नहीं था। काश! बोलने वाला कोई भी व्यक्ति किसी के बारे में कुछ कहने से पूर्व उसकी सत्यता के बारे में जांच करता एवं जिसके बारे में वह कर रहा हैं, उसकी मानसिकता की कल्पना करता।

खैर, कुछ भी हो, इन बीत रही घटनाओं ने संभवत: मेरे मन को कुछ निखारा भी होगा। संभव है मेरे में सहिष्णुता का विकास हुआ। धीरे-धीरे बीतते समय के साथ सम्मेलन की स्थिति मजबूत होती जा रही थी क्योंकि दूर सुदूर से श्रमण श्रमणी वृंद उग्र विहार करते हुए पालीताणा पधार रहे थे। ज्यों-ज्यों साधु-साध्वी भगवंत पधारते जा रहे थे,

त्यों-त्यों स्वत: चारो और सकारात्मक ऊर्जा बढती जा रही थी।

सम्मेलन संबंधी चर्चा अब धीरे-धीरे कार्य रूप में आगे बढी। प्रमुख साधु-साध्वी भगवंत एवं समस्त श्रावक-श्राविका वर्ग एक ही बात कह रहा था- गुरूदेव को अब जल्दी से जल्दी आचार्य पद लेकर संघ को विधिवत् आगे बढाना चाहिये। सबसे अच्छा अवसर है- साधु सम्मेलन। जितने गुरूभगवंत इस बार एकत्र हो रहे है, पुन: दुबारा किसी स्थिति में इतने साधु-साध्वी एकत्र नहीं हो पायेंगे।

बार-बार इतनी व्यवस्था होना भी आसान नहीं होता। बात अटक रही थी मुहूर्त पर। सभी ने अपने-अपने तरीके से मुहूर्त के बारे में प्रमुख आचार्य भगवंतों से चर्चा भी की। अन्य गच्छीय आचार्य भगवंत एवं पंडितों द्वारा सकारात्मक उत्तर पाकर समिति ने पुन: 26 जनवरी को भारत के अनेक खरतरगच्छीय प्रतिनिधि संघों के साथ गुरूदेव को एकबार पुन: निवेदन किया। गुरूदेव ने सकारात्मक उत्तर देते हुए कहा-मैं सकल संघ की भावना का सम्मान करता हूँ पर निर्णय सम्मेलन में ही होगा।

गुरूदेव की विनम्र शब्दावलि एवं सामूहिक उत्तरदायित्व की मानसिकता से उपस्थित सारे संघ जैसे अहोभाव से भर उठे। विनंति जितनी गरिमापूर्ण थी, गुरूदेव का उत्तर उससे भी अधिक गरिमापूर्ण था। कितना शालीन और समयोचित उत्तर था गुरूदेव का। मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि महाराज श्री इतना सुंदर समाधान देंगे। क्योंकि गुरूदेव की स्वीकृति सम्मेलन की महिमा को गौण कर सकती थी तो अस्वीकृति उपस्थित जनता की भावनाओं को खंडित कर सकती थी। मैं तो वैसे भी पूज्य श्री के समाधान की कायल रही हूँ। इस संतुलित उत्तर ने इसमें और बढोतरी कर दी। अब सबकी उत्सुकता 1 मार्च पर टिक गयी।

हम बंधे हुए थे। आचार्य पद की तैयारी बिना स्वीकृति से हो नहीं सकती थी और स्वीकृति एक मार्च से पूर्व संभव नही थी।

आखिर वह क्षण भी आ गया जिसकी प्रतिक्षा थी। 14 फरवरी का मुहूर्त्त था पूज्य उपाध्याय श्री का पालीताणा प्रवेश का और उनके जिन-जिन साधु-साध्वी भगवंतों को अनुकूलता बन रही थी उन्होंने भी पूज्य गुरूदेव के साथ ही पालीताना पदार्पण की योजना बना ली थी। प.पू. संघरत्ना शशिप्रभा श्रीजी म.सा., आदरणीया स्नेहशीला कल्पलताजी म. एवं हम सभी का अत्यंत भव्यता से पालीताना हरिविहार में प्रवेश हुआ। इसी के साथ धीरे-धीरे यह कारवां बढ़ता गया। पू. गुरूदेव के आज्ञावर्ति सभी गुरू भगवंत 27 फरवरी तक पधार गये।

अब सभी की धड़कने सम्मेलन की कल्पना मात्र से आनंद से तेज हो रही थी। हरि विहार जैसे इस विशाल धवलसेना को पाकर नाच रहा था। तनाव के बादल दूर-दूर छितरा चुके थे। परस्पर सभी मिलकर झूम रहे थे। जब सामुहिक वंदन में हम एकत्र होते थे, खुद को चिकोटी काटकर पूछना पड़ता था कि यह स्वप्न हैं या हकीकत?खरतरगच्छ में भी इतनी विशाल संख्या एकत्र हो सकती हैं क्या?

28 एवं 29 फरवरी तक समिति के काफी पदाधिकारी पहुँच गये। युवाशक्ति, जो पूज्य गुरूदेव श्री की ही कल्पना जगत की उपज हैं और जिसे गच्छ एवं जिनशासन की सेवा के लिये उन्होंने संगठित करके उसे खरतरगच्छ युवा परिषद .. . हैं, उसके भी मुख्य-मुख्य पदाधिकारी पहुँच गये थे।

हरि विहार दुल्हन की तरह सजकर स्वागत सत्कार एवं अभिनंदन के लिये तैयार खड़ा था। 29 फरवरी को तो मेहमानों की कतार लग गयी थी और अचानक बजे एक गीत ने मुझे जैसे झंकृत कर दिया...

(क्रमश:)

प्रवर पर्षदा का गठन

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने साधु साध्वी सम्मेलन के दौरान सर्वसम्मति से लिये गये निर्णय के अनुसार आवश्यक विचार–विमर्श के लिये प्रवर पर्षदा का गठन किया। जिसमें उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म., गणी श्री मणिरत्नसागरजी म., महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म., प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म., गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म., गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म., साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म., साध्वी डॉ. श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म., साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म., साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. को सम्मिलित किया गया।

जीवन का अन्तिम लेख : मृत्यु

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

- मृत्यु जीवन का अन्तिम आलेख है।
- जो जीवन को सही मायने में जीता है, उसकी मृत्यु महोत्सव बन जाती है।
- दुनिया उसकी ही मृत्यु पर शोक व्यक्त करती है जिसने जीवन की श्रेष्ठता एवं चिन्तन की पवित्रता हासिल की हो।
- मृत्यु रूपी परीक्षा से वही व्यक्ति डरता है जिसने जिन्दगी भर नींद और आराम को महत्त्व दिया हो।
- मरना तो है ही एक दिन, पर ऐसे मरो कि जिन्दगी महक उठे।
- मृत्यु कोई खौफ नहीं अपितु खुबसूरत है पर हम जिन्दगी भर उससे आँखें चुराते रहते हैं।
- जीओ तो ऐसे जीओं कि मरो तब दुनिया वालों को तुम्हारी रिक्तता का अहसास हो।
- मृत व्यक्ति को याद किया जा सकता है पर फरियाद तो जिन्दे से ही की जा सकती है।
- उस फूल की तरह मरो जो मुरझा जाये तब भी सुगंध को नहीं छोड़ता।
- अस्वस्थ तन से, असमाधिमय मन से और असंतुष्ट जीवन से मरना भी क्या मरना है। हकीकत में मरने की कला उसी ने पायी है जो स्वस्थता, सुख और समाधि पूर्वक जाता है।
- भीतर के नयन से मौत को देख लो फिर वह कपडे और मकान बदलने से बड़ा काम नहीं लगेगा।
- शरीर मरता है पर शरीरी नहीं क्योंकि आत्मा शरीर से विमुक्त है।
- दुर्जन का अज्ञानमरण, सज्जन का समाधिमरण और साधु का पण्डित मरण होता है।
- शरीर विलय के साथ इच्छाओं का महाविलय हो जाये तो आत्मा का मोक्ष हो जाता है।
- तुम्हारे मरने के बाद कितने लोग रोये, यह महत्व की बात नहीं है। महत्त्वपूर्ण तो यह है कि कितने लोगों ने तुम्हारें शुभ पथ-चिन्हों पर कदम आगे बढाये।
- मरने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण चीज है-कैसे मरना।
- जीने की कला हजारों महापुरुषों ने सिखायी पर मरने की कला तो सिर्फ महावीर प्रभु ने ही बतायी।
- मृत्यु देही की ही होती है। विदेही का जन्म ही नहीं होता तो फिर उसकी मृत्यु कैसी?
- अज्ञानी जीते हुए भी मृत है और ज्ञानी मरने के बाद जीते हैं।
- दुनिया का हर कार्य मुहूर्त्त में संभव है पर मृत्यु का कोई मुहूर्त्त नहीं निकाला जाता।
- मरने के बाद जन्म लेना परलोक कहलाता है पर मरने के बाद जन्म का सर्वथा अभाव हो जाये, वह परमलोक कहलाता है।

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

समाचार दर्शन

खरतरगच्छ का एक स्वर्णिम पृष्ठ

आचारांग, उत्तराध्ययन व दशवैकालिक के योग प्रारंभ

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री सिद्धाचल की पावन भूमि पर श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में 80 साधु साध्वी योगोद्वहन कर रहे हैं।

साधु साध्वी सम्मेलन में योगोद्वहन अनिवार्य किये जाने के निर्णय के आधार पर योग हो रहे हैं।

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आचारांग सूत्र के योगोद्वहन कर रहे हैं। जबकि मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. मैत्रीप्रभसागरजी म. व 47 साध्वीजी म. उत्तराध्ययन सूत्र के योग कर रहे हैं। 30 साध्वीजी म. दशवैकालिक के योग कर रहे हैं।

साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म., सम्यग्दर्शनाश्रीजी म., पूर्णप्रभाश्रीजी म., विमलप्रभाश्रीजी म., प्रीतियशाश्रीजी म., हर्षप्रज्ञाश्रीजी म., हर्षपूर्णाश्रीजी म., प्रियस्मिताश्रीजी म., प्रियवंदनाश्रीजी म., अमितगुणाश्रीजी म., कनकप्रभाश्रीजी म., विरागज्योतिश्रीजी म., संघमित्राश्रीजी म., श्रद्धांजनाश्रीजी म., श्रुतदर्शनाश्रीजी म., योगांजनाश्रीजी म., मधुरिमाश्रीजी म., मनोरमाश्रीजी म., प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म., प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म., प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म., प्रियदिव्यांजनाश्रीजी म., अभ्युदयाश्रीजी म., अमीझराश्रीजी म., प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म., अभिनंदिताश्रीजी म., अनंतदर्शनाश्रीजी म., प्रियनंदिताश्रीजी म., समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म., नयनंदिताश्रीजी म., चारूलताश्रीजी म., मयूरप्रियाश्रीजी म., चारित्रप्रियाश्रीजी म., प्रियश्रेयांजनाश्रीजी म., प्रियश्रुतांजनाश्रीजी म., स्वर्णोदयाश्रीजी म., प्रियशुभांजनाश्रीजी म., प्रियदर्शांजनाश्रीजी म., जिनज्योतिश्रीजी म., प्रमुदिताश्रीजी म., प्रियवर्षांजनाश्रीजी म., प्रियमेघांजनाश्रीजी म., समत्वबोधिश्रीजी म., सत्वबोधिश्रीजी म., प्रियविनयांजनाश्रीजी म., प्रियकृतांजनाश्रीजी म., प्रेयनंदिताश्रीजी म. उत्तराध्ययन सूत्र के योग कर रहे हैं।

पू. साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म., प्रियकल्पनाश्रीजी म., विनीतयशाश्रीजी म., शुद्धांजनाश्रीजी म., शीलांजनाश्रीजी म., दीपशिखाश्रीजी म., प्रियप्रेक्षांजनाश्रीजी म., प्रियज्ञानांजनाश्रीजी म., प्रियदक्षांजनाश्रीजी म., धर्मनिधिश्रीजी म., संवेगप्रियाश्रीजी म., सत्वोदयाश्रीजी म., कल्याणमालाश्रीजी म., संयमलताश्रीजी म., श्रेयनंदिताश्रीजी म., प्रियवीरांजनाश्रीजी म., प्रियचैत्यांजनाश्रीजी म., विरलप्रभाश्रीजी म., विपुलप्रभाश्रीजी म., विरतिप्रभाश्रीजी म., विनम्रप्रभाश्रीजी म., विशुद्धप्रभाश्रीजी म., विश्रुतप्रभाश्रीजी म., प्रियशैलांजनाश्रीजी म., प्रियमुद्रांजनाश्रीजी म. ,प्रियमंत्रांजनाश्रीजी म., परमप्रियाश्रीजी म., मननप्रियाश्रीजी म., प्रियसूत्रांजनाश्रीजी म., भव्यप्रियाश्रीजी म., श्रीजी म. दशवैकालिक के योग कर रहे हैं।

आचारांग प्रथम श्रुतस्कंध के योग 24 दिन तक चलेंगे, जबकि उत्तराध्ययन सूत्र के योग 28 दिन चलेंगे। दशवैकालिक योग 15 दिन के होंगे। आचारांग के योग में तीन आयंबिल तथा 21 निवियाता होता है। उत्तराध्ययन सूत्र में तीन आयंबिल व 25 निवियाता, दशवैकालिक में तीन आयंबिल व 12 नीवीं की तपस्या करनी होती है। तपस्या में आयंबिल व नीवीयाता होता है। योगोद्वहन की क्रिया सुबह से ही प्रारंभ हो जाती है। वसति संशोधन, कालग्रहण, काल पवेयण, सज्झाय पठावण, सूत्र-उद्देश समुद्देश अनुज्ञा विधान, पवेयणविधि, कालमांडला आदि विधियाँ करनी होती है। योगोद्वहन का पारणा चैत्र सुदि 12 ता. 20 मार्च 2016 को होगा। पूज्य गुरुदेव श्री तत्वार्थ सूत्र पर वाचना फरमाते हैं। मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. श्रीमद् देवचन्द्र चौवीशी की वाचना देते हैं।

खरतरगच्छ के इतिहास का स्वर्णिम प्रसंग बना महासम्मेलन

श्री खरतरगच्छ महासम्मेलन का सफलतम आयोजन संपन्न

विश्व विख्यात शाश्वत तीर्थ पालीताना में दि. 1 मार्च से 12 मार्च तक चल रहे अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासम्मेलन पूर्णता पूज्य खरतरगच्छाधिपति गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी महाराज के आचार्य पदारोहण के साथ हुई। खरतरगच्छ महासम्मेलन का अंतिम दिन खरतरगच्छ के इतिहास का स्वर्णिम साक्षी बना। इस दिन नमस्कार महामंत्र के तीसरे पद पर आरूढ़ होते हुये गणाधीश मणिप्रभसागर से आचार्य जिनमणिप्रभसागरसूरि बने। आचार्य पदारोहण समारोह का निर्देशन विधि विधान आचार्य विजयराजयशसूरिजी म., अचलगच्छाधिपति आचार्य गुणोदयसागरसूरिजी म., आचार्य श्री यशोवर्मसूरिजी म., आचार्य श्री राजशेखरसूरिजी म., आचार्य श्री अभयशेखरसूरिजी म., आचार्य श्री विजय हेमचन्द्रसूरिजी म., विमल गच्छाधिपति आचार्य श्री प्रद्युम्नविमलसूरिजी म., आचार्य श्री विनयसेनसूरिजी म., आचार्य श्री धर्मध्वजसूरिजी म. , आचार्य श्री विजयरविरत्नसूरिजी म., आचार्य श्री जयानंदसूरिजी म., आचार्य श्री चन्द्रशेखरसागरसूरिजी म., गच्छाधिपति आचार्य श्री धर्मधुरन्धरसूरिजी म., आचार्य श्री जयरत्नसागरसूरिजी म., आचार्य श्री अजितयशसूरिजी म., आचार्य श्री अक्षयचन्द्रसागरसूरिजी म., आचार्य श्री कीर्तिसेनसूरिजी म., उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. , पंन्यास श्री विज्ञानप्रभविजयजी म., पंन्यास श्री पुण्डरीकविजयजी म., उपाध्याय श्री विश्रुतयशविजयजी म., प्रवर्त्तक श्री वज्रयशविजयजी म., मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म., मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., गणी श्री मणिरत्नसागरजी म.

, त्रिस्तुतिक संप्रदाय के मुनि श्री हितेशचन्द्रविजयजी म., मुनि श्री निपुणरत्नसागरजी म. सहित अन्य कई आचार्य भगवंतों की पावन निश्रा में हुआ। समारोह को सानिध्यता प्रदान की- महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. श्रमणी रत्ना माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. आदि खरतरगच्छ के 144 साध्वीजी भगवंतों ने! लगभग 600 साधु साध्वी भगवंतों ने आचार्य पदवी समारोह में अपनी उपस्थिति देकर जैन समाज में एकता की मिसाल कायम की।

समुदाय के लिये यह पहला अवसर था जब खरतरगच्छ के 162 साधु साध्वियों की सानिध्यता मिली हो।

इनके अलावा अनेक आचार्य भगवंतों ने संदेश, कामली व वासक्षेप भिजवाकर अपनी शुभकामनाऐं प्रेषित की।

आचार्य श्री विजयराजयशसूरिजी म. ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भारत भर की विशाल जनमेदिनी सहित विभिन्न आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वियों का पधारना यह खरतरगच्छ की एकता के साथ जैन एकता का भी नया इतिहास है। इस अवसर पर भारत भर के समस्त श्री खरतरगच्छ संघों के पदाधिकारियों, ट्रस्टियों, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की सभी शाखाओं के पदाधिकारियों सहित हजारों कार्यकर्ताओं व विशिष्ट श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर गच्छ व समुदाय के प्रति अपनी आस्था प्रकट की।

समारोह का आयोजन अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासम्मेलन आयोजन समिति के तत्वावधान में किया गया। समिति ने देश भर से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए आवास की सुन्दर व्यवस्था तीर्थ की लगभग विभिन्न 100 से अधिक धर्मशालाओं में व्यवस्थित तरीके से की गई। भोजन की व्यवस्था हेतु एक विशाल भोजन मंडप बनाया गया, जहां एक साथ 3000 से अधिक लोग बैठकर भोजन कर सकते थे। भारत भर से लगभग 20,000 से अधिक लोगों ने इस भव्य समारोह में भाग लिया।

सभी आगंतुकों ने सम्मेलन के आयोजन व व्यवस्था की मुक्त कंठ से सराहना की।

साधु साध्वी सम्मेलन दि. 1 मार्च से 9 मार्च तक माधवलाल धर्मशाला स्थित खरतरगच्छ सभागार में आयोजित हुआ। देव गुरु को वंदन कर गणनायक सुखसागरजी म. की प्रार्थना व सम्मेलन गीतिका के सामूहिक संगान से सम्मेलन का प्रारंभ किया जाता था। सभा में गच्छ के सभी साधु साध्वी उपस्थित रहे। गच्छ व समुदाय की प्रगति, क्रियाओं में एकरूपता, समाचारी के विवरणों की शास्त्र पाठ के आधार पर चर्चा कर सर्वसम्मति से निर्णय लिये गये। विगत 60 वर्षों के बाद हुये इस आयोजन ने संपूर्ण गच्छ के लिये ऐतिहासिक उपलब्धि एवं गच्छ एकता और विकास का अनूठा उदाहरण पेश किया।

समारोह में खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरिजी महाराज ने सभा को संबोधित करते हुए कहा- परमात्मा महावीर ने संघ की महिमा बताई है। संघ को कल्पवृक्ष और कामधेनु की उपमा दी है। संघ की प्रगति के मूल में समर्पण छिपा है। जिस संघ के लोग अपने संघ और उसकी मर्यादा के प्रति प्रामाणिक रूप से समर्पित रहते हैं, वह संघ दिन दूनी और रात चौगुनी प्रगति करता है।

उन्होंने कहा- हमें खरतरगच्छ की कीर्ति पताका पूरे विश्व में फहरानी है। खरतरगच्छ जिनशासन का अंग है। जिनशासन है तो खरतरगच्छ है। खरतरगच्छ का विस्तार जिन शासन का विस्तार है। दादा गुरुदेवों ने हमारे पूर्वजों को वीतराग परमात्मा का शासन दिया... धर्म दिया! हमें कृतज्ञ होना है। अपनी परम्परा के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होना है।

उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. व गणिवर्य श्री मणिरत्नसागरजी म. ने अपने उद्‌बोधन में समुदाय की एकता व अनुशासन पर जोर दिया। साथ ही महत्तरा दिव्यप्रभाश्रीजी म., प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी म., गणिनी सुलोचनाश्रीजी म., गणिनी सूर्यप्रभाश्रीजी म., बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म., साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म., साध्वी कल्पलताश्रीजी म., साध्वी डॉ.

लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म., साध्वी संघमित्राश्रीजी म., साध्वी स्नेहयशाश्रीजी म. आदि सभी ने कहा कि पद की जिम्मेदारी और व्यवस्था, समुदाय की उन्नति के लक्ष्य से होनी चाहिये। सभी पूज्यवरों ने एक मत से कहा कि खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा में साधु साध्वी सम्मेलन एक निर्णायक व सार्थक गतिविधि है। सम्मेलन का निर्णय गच्छ के लिये अंतिम है। नौ दिनों तक उभय समय चले सम्मेलन में साधु साध्वी मंडल ने अनेक प्रस्तावों पर स्वीकृति प्रदान की।

दि. 10 मार्च को प्रातः जिनहरि विहार धर्मशाला से शोभायात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें आचार्य विजयराजयशसूरिजी म., गणाधीश मणिप्रभसागरजी म., उपाध्याय भगवंत व मुनियों के समूह सहित तीर्थ में बिराजित अनेक गुरुभगवंतों ने शोभायात्रा व समारोह में अपना सानिध्य प्रदान किया। शोभायात्रा हाथी, घोड़े, बेंड सहित अनेक झांकियों से युक्त था, जो तलेटी रोड पर जिनशासन और खरतरगच्छ की जय-जयकार करता हुआ गिरिराज तलहटी पर पहुंचकर गिरिराज की आराधना में संलग्न हुआ।

दोपहर में सुखसागर नगर के खचाखच भरे पांडाल में प्रारंभ में वरिष्ठ सदस्यों ने दीप प्रज्वलन कर देव गुरु वंदन कर सम्मेलन का विधिवत् प्रारंभ किया। समिति के चेयरमेन श्री मोहनचंद ढड्ढा, प्राणीमित्र श्री कुमारपाल भाई, संयोजक श्री विजयराज डोसी, संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, भंवरलालजी छाजेड, श्री मोतीचंदजी झाबक, श्री वंसराजजी भंसाली ने सम्मेलन की आवश्यकता पर बल देते हुये सभी का स्वागत किया।

प्रारंभ में खरतरगच्छ के प्रभावशाली इतिहास का पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने धाराप्रवाह शैली व ओजस्वी वाणी में विवेचन किया जिसे श्रवण कर जनसमूह ने धन्यता का अनुभव किया। इस दिन मंच संचालन प्रख्यात कवयित्री सौ. सावित्री कोचर ने किया।

पूज्य गणाधीश ने सभा को संबोधित करते हुये कहा कि जैन धर्म में चतुर्विध संघ का अनूठा महत्व है। जिसमें साधु साध्वी श्रावक और श्राविका

का परिगणन किया गया है। जिस प्रकार रथ अपने चारों पहियों के साथ ही सुरक्षित व गतिमान है, वैसे ही धर्म भी इन चार संघों से सुरक्षित व पल्लवित है। तीर्थंकर भी देशना देने से पूर्व संघ को नमस्कार करते हैं। उसी शिष्ट परंपरा को मान्य कर आज भी संघ का उदात्त प्रभाव देखा जा रहा है। जिनवल्लभसूरि के संघपट्टक ग्रंथ व सामाचारी शतक प्रकरण का आधार देकर कहा कि अनुशासन के बिना संघ की प्रगति नहीं हो सकती। लगभग 60 वर्षों के बाद में होने वाले इस सम्मेलन को सबको मिल कर पूर्ण रूप से सार्थक करना है। वर्षों बाद इतनी बडी संख्या में साधु साध्वी एकत्र हुए हैं। हमें मिल कर मंथन करना है कि शासन व गच्छ के कार्यों को आगे बढाते हुए हम अपनी आत्मा का कल्याण कैसे करें! इसके लिये हमें अपनी नियमावली बनानी है। संपूर्ण देश को भारतीय संस्कृति की प्राचीन परम्पराओं व संस्कारों से अवगत कराते हुए उनकी प्रतिष्ठा करने का बीडा उठाना है। पूज्य गुरुदेवश्री ने साधु साध्वी सम्मेलन

में लिये गये विभिन्न निर्णयों की घोषणा करते हुये कहा कि ये सभी नियम समुदाय के समस्त साधु साध्वियों पर लागु किये गये हैं।

इस अवसर पर मुनि मनितप्रभसागरजी म. द्वारा लिखित 'साधना का ऐश्वर्य चेतना का माधुर्य' आदि छह पुस्तकों का, साध्वी सौम्यगुणाश्रीजी म. द्वारा डी. लिट् शोध से परिपूर्ण 23 पुस्तकों का एवं साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. द्वारा लिखित 'मणिप्रभ: एक उजला सफर' पुस्तक का विमोचन कुमारपाल भाई वि. शाह, राजस्थान सरकार के गृहमंत्री माननीय श्री गुलाबचंदजी कटारिया, डॉ. जितेन्द्र बी. शाह, डॉ. सुषमाजी सिंघवी, पं. हरेशभाई कुबडिया सहित समारोह समिति के पदाधिकारियों द्वारा किया गया।

श्रावक-श्राविका सम्मेलन के सत्र में खरतरगच्छ संघों के प्रतिनिधियों ने समाज कल्याण, धर्म उन्नति, गच्छ अभिवृद्धि सहित वर्तमान समय में चल रही विसंगतियों को खत्म करने हेतु अपने विविध सुझाव दिये। विशेष सभा में श्रावकों के प्रश्नों का प्रत्युत्तर गणाधीश भगवंत ने देकर सभी जिज्ञासाओं का शास्त्रीय समाधान प्रदान किया। सुझावों में परिवारों में होने वाले सभी समारोहों में रात्रि भोजन बंद करने, बच्चों में जैन संस्कार हेतु पाठ्यक्रम एवं धार्मिक शिक्षा पर जोर, साधु साध्वी की वैयावच्च, दादावाडियों के संरक्षण, स्वाध्याय शिविरों पर जोर, संघ - युवा परिषद् - महिला परिषद् - बालिका परिषद् के साथ मिलकर गच्छ को मजबूत बनाना, समर्पण की भावना से हर कार्य करना आदि महत्वपूर्ण सुझाव दिये। इन सुझावों के आने पर लोगों ने हर्ष ध्वनि से दादा गुरुदेव का जयकारा बोला।

आचार्य पदारोहण के दिन प्रात: 9 बजे से शाम को 6 बजे तक भारी जनमेदिनी से लगभग 1 लाख वर्गफीट का विशाल पाण्डाल भरा रहा। यह गुरुदेव नूतन आचार्यश्री के प्रति श्रद्धा, समर्पण एवं भक्ति का प्रतीक था। आचार्य पदारोहण के दिन कार्यक्रम का सफल संचालन पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने अपने अनूठे अंदाज में किया।

इस कार्यक्रम को पारस चैनल पर सीधा प्रसारित किया गया, जिसे लाखों लोगों ने अपने घर बैठे देखकर अपने मन में प्रमोद भावों का अनुभव किया एवं संचार सुविधाओं द्वारा मंगल कामना प्रेषित की।

खरतरगच्छ की दिव्यता, भव्यता, ऐतिहासिकता एवं प्रखरता का दिग्दर्शन कर अखिल भारतीय जैन श्री संघ आनंद मिश्रित प्रसन्नता से अवाक् रह गया। इस समारोह से हजार वर्ष प्राचीन यह गच्छ परम प्रभावक सहस्रांशु की भांति जाज्वल्यमान हुआ। इस आयोजन से पूरे भारत में खरतरगच्छ की महानता, विशिष्टता एवं प्रभावकता का शंखनाद हुआ।

लाभार्थी परिवार-

सूरिमंत्र पट्ट अर्पण- संघवी श्री शांतिदेवी पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा मोकलसर

कामली- श्री भंवरलालजी सौ. सुआदेवी छाजेड बाडमेर

प्रथम गुरुपूजन- पूज्य नूतन आचार्यश्री के सांसारिक ननिहाल पक्ष के मोकलसर निवासी श्रीमती जडावीदेवी कपूरचंदजी पालरेचा परिवार ने लाभ लिया।

पूज्यश्री के नूतन नामकरण का लाभ- छत्तीसगढ रायपुर निवासी श्री मोतीलालजी संपतराजजी झाबक परिवार ने लिया।

स्थापनाचार्य- संघवी कुशलचंदजी उत्तमचंदजी गुलेच्छा, मोकलसर

माला- श्री मोतीलालजी संपतराजजी झाबक परिवार, रायपुर

आसन- श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, बाडमेर सूरत

नूतन वासकुंपा- पूज्यश्री के परिवार से श्री बाबुलालजी तेजराजजी रमेश लूंकड, मोकलसर

पात्र- श्री ज्ञानचंदजी पदमजी कोठारी, दुर्ग

संथारिया- संघवी श्री अशोककुमारजी मानमलजी भंसाली, सिवाना

उत्तरपट्टा- श्री नेमीचंदजी सुनीलकुमारजी नाहटा परिवार, कोयम्बतूर, कोलकाता

ठवणी- श्री जीवराजजी उकचंदजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचोर

डंडासण- श्री हस्तीमलजी रतनलालजी बोथरा, बाडमेर दिल्ली

डंडा- श्रीमती इचरजदेवी चंपालालजी विजयराजजी प्रेमलता देवी

डोसी, बैंगलोर

इस समारोह की सफलता का श्रेय आयोजन समिति एवं सकल खरतरगच्छ श्री संघों को जाता है। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की समस्त शाखाओं का योगदान सराहनीय रहा।

उपाध्याय, गणि, महत्तरा, प्रवर्तिनी, गणिनी पद आरोहण

श्री सिद्धाचल की पावन भूमि पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासम्मेलन के वातावरण में ता. 11 मार्च 2016 को पूज्य गुरुदेव गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में पदारोहण समारोह का आयोजन हुआ।

ता. 2 मार्च 2016 को साधु साध्वी सम्मेलन के दौरान पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. को उपाध्याय पद, पूज्य पल्लीवाल रत्न मुनि श्री मणिरत्नसागरजी म. को गणि पद, पूजनीया खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. को महत्तरा पद, पूजनीया बंग देशोद्धारिका श्री शशिप्रभाश्रीजी म. को प्रवर्तिनी पद, पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म. एवं पूजनीया मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. को गणिनी पद प्रदान करना सर्वसम्मति से तय किया गया था।

इस निर्णय के अनुसार ता. 11 मार्च को पूज्य गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म. ने पद प्रदान विधि संपन्न करवाई। ता. 11 मार्च को प्रातः शुभ मुहूर्त्त में श्री सुखसागर नगर के विशाल पाण्डाल में श्री संघ के साथ प्रवेश हुआ। पद प्रदान की समस्त विधि करवाने के पश्चात् कर्णपूजन किया गया। तथा पदस्थ होने वाले पूज्य मुनिवरों व साध्वीजी महाराजों को पूज्य गणाधीशजी ने विधि विधान के साथ वर्धमान विद्या मंत्र प्रदान किया। वर्धमान विद्या प्रदान करने के साथ ही सकल श्री संघ में परम हर्ष एवं आनंद का वातावरण छा गया।

सभी पदस्थों का नामकरण विधान किया गया। वर्धमान विद्या पट्ट अर्पण किया गया। गुरुपूजन एवं पद की कामली ओढाई गई।

प्रतिनिधि सभा की घोषणा

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया- अखिल भारतीय स्तर पर खरतरगच्छ की एक प्रतिनिधि संस्था होनी चाहिये जिसमें भारत के समस्त खरतरगच्छ संघों का उचित प्रतिनिधित्व हो, जिसमें व्यक्तिगत सदस्यता न होकर संघों की सदस्यता हो।

पूज्यश्री ने इस हेतु श्री अखिल भारतीय जैन श्वे. खरतरगच्छ प्रतिनिधि सभा की घोषणा की। तथा इसके विधान, प्रारूप व संघों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिये दो व्यक्तियों के नामों की घोषणा की। श्री मोहनचंदजी ढड्ढा

प. पू. गणिनी पद विभूषिता सुलोचनाश्रीजी म.सा.
प. पू. सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या

प. पू. साध्वीरत्ना
डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा.

के 25वें दीक्षा दिवस पर
बधाई...बधाई...बधाई...
वंदना...अभिनंदना...

पू. सुलोचनाश्रीजी म.सा.

साध्वी श्री प्रीतियशाश्रीजी म. सा.

डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा.

शुभेच्छु

सज्जनराजजी-स्व. श्री उमरावबाई (सांसारिक पिताजी-माताजी)

स्व. चन्द्रकान्ता कोटेचा (बहन), कैलाशचंद-ममता (भ्राता-भ्रातावधु)

जिनेश, सिद्धम (भतीजे) बेटा-पोता-परपोता स्व. दीपचंदजी गवरीबाई छाजेड़

हालावाला ब्यावर हाल मुकाम बैंगलोर

Firm :

MAMTHA JEWELS

No. 59/B,10th Main Road, 4th Block Rajaji Nagar, Bangalore 560010

Cell : 9845531007, 9060061998, Tel. : 080-23204530

चेन्नई इस संस्था के संयोजक तथा श्री मोतीलालजी झाबक रायपुर को उप संयोजक बनाया गया। ये शीघ्र ही आगे की कार्यवाही कर विधि विधान के साथ इस प्रतिनिधि सभा का गठन करेंगे।

इस एडहॉक कमिटी में श्री विमलचंदजी सुराणा, श्री तेजराजजी गुलेच्छा, श्री भंवरलालजी छाजेड, श्री विजयराजजी डोसी, श्री वीरेन्द्रजी मेहता, श्री तिलोकचंदजी बरडिया, श्री वंसराजजी भंसाली, श्री प्रकाशजी कानूगो, श्री उत्तमचंदजी रांका, श्री भूरचंदजी जीरावला, श्री पदमजी टाटिया, श्री दीपचंदजी बाफना, श्री बाबुलालजी लूणिया, श्री बाबुलालजी मरडिया, श्री प्रकाशचंदजी सुराणा, श्री विजयचंदजी गोलेच्छा, श्री बाबुलालजी संखलेचा, श्री पुखराजजी चौपडा, श्री विजयमलजी लोढा, श्री हीरालालजी मुसरफ, श्री गौतमचंदजी कवाड, श्री मांगीलालजी मालू, श्री बाबुलालजी पालरेचा, श्री गजेन्द्रजी भंसाली, श्री महेन्द्रजी रांका को सम्मिलित किया गया।

त्रिदिवसीय सम्मेलन

पूज्य गुरुदेव गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा व सानिध्यता में श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पावन भूमि पर खरतरगच्छ के गौरवशाली इतिहास में एक स्वर्णिम पृष्ठ अंकित हुआ। ता. 1 से 9 मार्च तक पूज्यश्री की निश्रा में श्रमण श्रमणी सम्मेलन संपन्न हुआ। ता. 10 मार्च 2016 को महासम्मेलन का उद्घाटन हुआ। ता. 10 को श्री जिन हरि विहार से तलेटी होते हुए सांचोरी भवन तक भव्य वरघोडा आयोजित हुआ। ऐसा विशाल वरघोडा अपने आप में अद्भुत व अनूठा था। इस वरघोडे में पूज्य आचार्य श्री राजयशसूरिजी म. सहित अनेक आचार्य, साधु व साध्वी मंडल का पदार्पण हुआ। पूज्य आचार्य श्री का आज नगरप्रवेश करवाया गया। वे उग्र विहार कर पूज्यश्री को आचार्य पद प्रदान करने हेतु अपने शिष्य समुदाय के साथ पधारे।

श्री सुखसागर नगर, श्री जिनेश्वरनगर, दादा गुरुदेवनगर का उद्घाटन किया गया। पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने खरतरगच्छ के इतिहास का धाराप्रवाह वर्णन किया। सम्मेलन के प्रथम दिन आज पूज्य साध्वीजी भगवंतों के उद्बोधन हुए। पू. साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म., पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म., पू. श्री कल्पलताश्रीजी म., पू. श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म., पू. श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म., पू. श्री विश्वज्योतिश्रीजी म., पू. श्री स्नेहयशाश्रीजी म., पू. श्री संघमित्राश्रीजी म., पू. श्री मित्रांजनाश्रीजी म., पू. श्री श्वेतांजनाश्रीजी म., पू. श्री मयूरप्रियाश्रीजी म., के विशिष्ट प्रशंसनीय उद्बोधन हुए। उन्होंने गच्छ विकास हेतु कई सुझाव दिये।

दोपहर व रात्रि के सत्र में प्रमुख श्रावकों के उद्बोधन हुए। सत्र का संचालन ज्योतिकुमारजी कोठारी ने किया। रात्रि के सत्र का संचालन अरविन्द कोठारी ने किया। ता. 11 को प्रातः पदारोहण विधान के पश्चात् दोपहर के सत्र में प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम हुआ। पूज्यश्री ने धाराप्रवाह सारे प्रश्नों का, शंकाओं का सटीक समाधान दिया। रात्रि के अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के अधिवेशन में डॉ. महावीर गोलेच्छा एवं श्री सुधीरजी लोढा के विशेष प्रभावशाली प्रवचन हुए।

संचालन रमेश लूंकड ने किया। दोनों ही दिन तीनों सत्रों में विशाल पाण्डाल खचाखच भरा रहा। यह सम्मेलन के प्रति सकल श्री संघ के समर्पण व समर्थन को अभिव्यक्त करता है।

श्री स्तम्भन पार्श्वनाथाय नमः
अनन्तलब्धिनिधान
श्री गौतमस्वामिने नमः

श्री आदिनाथाय नमः
प. पू. दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त मणिधारी चन्द्र,
कुशल-चन्द्र गुरुभ्यो नमः
प. पू. गणनायक सखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

श्री वर्धमान स्वामिने नमः
खरतरविरुद धारक
जिनेश्वरसूरि गुरुभ्यो नमः

श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पावन धरा पर

अष्टदिवसीय ''जीवन जीने की कला'' आवासीय कन्या संस्कार शिविर

''रजत संयम दिवस के अनुमोदनार्थ''

25 छोड़ सहित उजमणा विशेष रुप से साधु-साध्वी वैयावच्च सामग्री अर्पण कार्यक्रम

दिव्यकृपादृष्टि
प. पू. आ. श्री जिनकान्ति सागर सूरीश्वरजी म.सा.
प. पू. प्र. प्रेमश्रीजी म.सा.
प. पू. तेजश्रीजी म.सा.

आज्ञा प्रदाता
प. पू. खरतरगच्छाधिपति
श्री जिनमणिप्रभसागर सूरिजी म.सा.

प्रत्यक्ष कृपादृष्टि
प. पू. पार्श्वमणितीर्थ प्रेरिका
गणिनी पद विभूषिता
सुलोचनाश्रीजी म.सा.
तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म.सा.

प्रेरणा एवं मार्गदर्शिका
प. पू. साध्वीरत्ना डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि

प्रारंभ	स्थल	समापन
दिनांक 11.5.2016	सांचोरी भवन, पालीताणा	दिनांक 18.5.2016
बुधवार, वैशाख सुद 5		बुधवार, वैशाख सुद 12

समिति की प्रेरणादात्री एवं मार्गदर्शिका
प. पू. डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा.
के 25वें संयम दिवस पर
हार्दिक बधाई....वंदना...अभिनंदना...शुभकामना...

आयोजक एवं श्रद्धावन्त

अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति

लाभार्थी

* जिन शासन भक्त एवं गुरुभक्त
* सुरेशचंद महिपाल कोठारी रायचूर (कर्ना.)
* स्व. गंगादेवी स्व. लक्ष्मीचंदजी संकलेचा कोप्पल (कर्ना.)
* अंजूदेवी अशोककुमार तातेड़, रायपुर (छ.ग.)
* स्व. चंदनमल स्व. धापुबाई मोदी भिलाई (छ.ग.)
* पन्नालालजी गौतमचंद कवाड़, तिरुपातुर (तमि.)
* हंजारीमलजी संकलेचा बाड़मेर, भिवंडी (महा.)
* इन्द्रादेवी-आनंद, निहाल, निरव, नाभि श्रीमाल बैंगलोर (कर्ना.)
* नेमीचंदजी संजयकुमार विजयकुमार सुराणा रायपुर (छ.ग.)
* खमादेवी मिश्रीमलजी जीरावला, मुम्बई
* महेशजी बैंगलोर

विमोचन सम्पन्न

१. साधना का ऐश्वर्य चेतना का माधुर्य- मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा आनेखित विशाल पुस्तक में खरतरगच्छ के आदि से अथावधि पर्यन्त हुए लगभग 75 महा पुरूषों 300 से अधिक प्रसंगों को प्रस्तुत किया गया है।

२. सौ पहेलियां -मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा संयोजित-निर्मित उन सौ पहेलियों का संकलन है जो जहाज मंदिर मासिक में प्रकट होती रही हैं।

३. बाल वाटिका- पू. मुनि श्री द्वारा पूर्व में बालक संस्कार सिंचन-वर्धन हेतु सुवास वांटिका एवं रत्न वाटिका अनीव प्रसिद्ध रही है। उनसे भी पूर्व पढ़नीय 'बाल वाटिका' का उपहार धार्मिक, व्यवहारिक, नैतिक संस्कारों का निर्माण रही हुई जीवन-शैली को परिष्कृत करती है। पुस्तक रंगीन आकर्षक है।

४. मंत्र नवकार करे भवपार- नवकार की महिमा असीम है। नवकार के आध्यात्मिक महत्त्व के साथ व्यवहारिक, मानसिक, सामाजिक अवदान, प्रयोग, साधना का प्रस्तुतीकरण मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने किया हैं। यह 64 पृष्ठ वाली पुस्तक विविध रंगो-चित्रों से सजी है!

५. मृत्यु बने जीवन का महोत्सव- मुनिश्री की कलात्मक लेखनी से जीवन के साथ मृत्यु को कैसे कलात्मक बनाये? इस तथ्य पर चिन्तन किया गया है। यह रंगीन पॉकेट बुक है।

६. तर्क सग्रंह वृत्तिद्वय सहित- अन्नंभट्ट विकचित न्याय-दर्शन का ग्रन्थ तर्क संग्रह बन्द बुद्धि के द्वारों को चिन्तन तर्क की चाबियों से खोलने वाले न्याय बोधिनी/ पद्कृत्य टीका का विवेचन मुनि श्री ने सरल- सुबोध्य शैली में किया है।

७. मणिप्रभ:एक उजला सफर- साध्वी डॉ. नीलांजना श्रीजी म.सा. द्वारा पू. आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सागरसूरिजी म.सा. के जीवन चरित्र को विशिष्ट शैली में सजाया है। रंगीन पुस्तक चित्रों से आकर्षित करने वाली है। इन सभी पुस्तकों का विमोचन श्री खरतरगच्छ महासम्मेलन के दौरान श्री कुमारपाल भाई वी. शाह, शिक्षामंत्री गुलाबचन्द कटारिया, डॉ जितेन्द्र भाई वी शाह, सुषमा जी सिंघवी आदि के द्वारा सम्पन्न हुआ।

23 पुस्तकों का विमोचन

पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता पूजनीया साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. द्वारा लिखित/संशोधित 23 पुस्तकों का विमोचन पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. की पावन निश्रा में श्रावक प्रवर प्राणीमित्र श्री कुमारपाल भाई वि. शाह के कर कमलों द्वारा किया गया। इन्हीं पुस्तकों पर विश्वविद्यालय ने पूजनीया साध्वीश्री को डी. लिट्. की मानद् उपाधि प्रदान की। इस अवसर पर पूज्यश्री ने कहा-साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। वे हमारे समुदाय का गौरव है। वे और आगे प्रगति करें, यह कामना है।

पू. सुलोचनाश्रीजी म.सा.

गूंगा इंसान कभी गीत गा नहीं सकता,
ठहरा हुआ पांव कभी मंजिल पा नहीं सकता।
'गुरुवर्याश्री' से रोशनी मिल गई जिसको,
वह अंधेरे में भी ठोकर खा नहीं सकता।।

पू. सुलक्षणाश्रीजी म.सा.

प. पू. गणिनी पद विभूषिता

सुलोचनाश्रीजी म.सा. प. पू. सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या

प. पू. साध्वीरत्ना डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा.

के 25वें दीक्षा दिवस पर

बधाई...बधाई...बधाई...वंदना...अभिनंदना...

डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा.

तिथि से	तारिख से
वैशाख सुदि 5, बुधवार	18.5.2016 बुधवार

वन्दनकर्ता

संघवी श्रीमान् पुखराजजी अमृतलालजी कटारिया

महाभैरव मेटल इण्डस्ट्रीज - युनीट नं. 7, 200/202 त्रिवेणी हाऊस,
13 वीं खेतवाड़ी बैक रोड़, मुम्बई-004

श्री खरतरगच्छ सम्मेलन के निर्णयों की सर्वत्र सराहना

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री खरतरगच्छ महासम्मेलन का जो सफलतम विराट् आयोजन हुआ, उसकी सर्वत्र अनुमोदना की जा रही है।

इस सम्मेलन को क्रियोद्धार का स्वरूप समझा जा रहा है। निर्णयों की तत्काल क्रियान्विति प्रारंभ हो गई है। साधु साध्वियों से संबंधित जो समाचारी का निर्णय किया गया, पूज्य गुरु भगवंतों ने उसका परिपालन प्रारंभ कर दिया है।

इसी प्रकार रात्रि भक्ति भावना के आयोजन में दूध, चाय, नाश्ता आदि के प्रतिबंध के विषय में पूज्य गुरुदेवश्री ने जो घोषणा की थी, उसका क्रियान्वयन मालपुरा मेले में देखा गया। होली मेले के अवसर पर संपूर्ण रात्रि गुरुदेव की भक्ति का वातावरण जमा, पर पानी के सिवाय अन्य किसी भी खाद्य या पेय पदार्थ का उपयोग नहीं किया।

पूज्य गुरुदेवश्री ने समस्त भारत के खरतरगच्छ श्री संघों को आदेशात्मक निवेदन किया है कि गच्छ व जिनशासन हित में जो महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये हैं, सकल श्री संघों में उसका सुव्यवस्थित पालन हो।

सिद्धाचल में संस्कार शिविर

श्री सिद्धाचल की पावन भूमि पर आठ दिवसीय आवासीय शिविर का आयोजन ता. 11 मई 2016 से 18 मई 2016 तक किया जा रहा है।

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञावर्तिनी पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी पद विभूषिता श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति द्वारा इस शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

इस शिविर के अन्तर्गत 14 से 28 वर्ष की अविवाहित बालिकाऐं भाग लेगी। जीवन जीने की कला सिखाना, इस शिविर का मुख्य उद्देश्य है।

इस संस्था द्वारा हर वर्ष विविध समाजोपयोगी कार्य किये जाते हैं। इस शिविर में भाग लेने की इच्छुक बालिकाऐं इस 09820707621 नंबर पर संपर्क करें।

पालीताना में आयोजन

पालीताना श्री जिन हरिविहार में पूज्य आचार्यश्री के जन्म दिवस पर बिना किसी आडम्बर या प्रचार के साधु साध्वियों द्वारा गुणानुवाद किया गया।

पूज्य आचार्यश्री ने कहा- जन्म दिवस तो मृत्यु दिवस है। एक वर्ष अपनी आयुष्य में से कम हो गया है। जन्म दिवस पर भेंट दी जाती है। मेरा जन्म दिवस है तो मैं आपकी ओर से कुछ भेंट चाहता हूँ। मुझे कोई सामान नहीं चाहिये। मैं तो मात्र इतना चाहता हूँ कि सम्मेलन में हम सभी ने मिलकर जो अपना विधान बनाया है, समाचारी बनाई है, नियम बनाये हैं। वे नियम कागजों में ही न रहे, अपितु हमारे आचरण में उतरे। बस मैं यही आपसे भेंट चाहता हूँ।

उन्होंने कहा- मुझे अपने साधु साध्वियों पर बहुत नाज है.. गौरव है। हमारे साधु साध्वी जहाँ भी पधारते हैं, शासन की उत्तम सेवा करते हैं। पर जो शिथिलताऐं हमारे जीवन में आ गई है, उन्हें दूर करना है। संयम ग्रहण करने के लक्ष्य को केन्द्र में रख कर आराधना व संयम साधना करनी है।

सभी साधु साध्वियों ने एक स्वर से कहा- आपका हर आदेश हमें स्वीकार्य होगा। नियमों का संपूर्ण रूप से पालन होगा।

इस अवसर पर पू. मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., मोक्षप्रभसागरजी, कल्पज्ञसागरजी, श्रेयांसप्रभसागरजी, मलयप्रभसागरजी ने कविता, गीतिका व वक्तव्य के द्वारा अपने भाव प्रकट किये।

सभा का संचालन पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी ने किया। उन्होंने सभा का संचालन करते हुए अनुभूत अनेक प्रसंग सुनाये।

इस अवसर पर पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की ओर से साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी म., प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की ओर से साध्वी सौम्यगुणाश्रीजी म., गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की ओर से साध्वी प्रियश्रेयांजनाश्रीजी, प्रियवर्षाजनाश्रीजी, प्रियदर्शांजनाश्रीजी, प्रियशुभांजनाश्रीजी, प्रियचैत्यांजनाश्रीजी, गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी की ओर से साध्वी अमितगुणाश्रीजी म., बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की ओर से साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म., साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की ओर से साध्वी विश्वरत्नाश्रीजी म., साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. की ओर से साध्वी प्रमुदिताश्रीजी म., साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. की ओर से साध्वी डॉ. श्वेतांजनाश्रीजी म., साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म., साध्वी श्री वैराग्यनिधिश्रीजी म., साध्वी श्री मित्रांजनाश्रीजी म. साध्वी श्री भाग्योदयाश्रीजी म. आदि ने कविता, गीतिका व वक्तव्यों द्वारा पूज्यश्री को जन्म दिवस की बधाई दी तथा पूज्यश्री के गुणों का वर्णन करते हुए अपनी शुभकामना प्रस्तुत की।

मुंबई से विशेष रूप से पधारे सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री नरेन्द्र वाणीगोता ने गीतिका के माध्यम से वातावरण को गुरुभक्तिमय बनाया। मुमुक्षु नीलिमा भंसाली ने गीतिका के द्वारा पूज्यश्री का गुणगान किया।

उपाध्याय प्रवर मनोज्ञसागरजी का नवसारी में भव्य नगर प्रवेश

श्री खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वर जी म.सा. के आज्ञाकारी परम पूज्य उपाध्याय भगवंत श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. के उपाध्याय पदारोहण के बाद गुजरात की धरा पर डायमंड नगरी नवसारी नगर में पहली बार आगमन पर भव्य प्रवेश शोभा यात्रा दिनांक 26 मार्च 16 शनिवार को सुबह 8 बजे जूना थाना सर्कल से गाजते बाजते, सोमैया के साथ, बेंड की मधुर धुन के गीतों के साथ शहर के विभिन्न मार्गो से होती हुई दरगाह रोड स्थित मणिधारी भवन पहुंची जहाँ धर्म सभा में परिवर्तित हो गई। गुरूभक्त चम्पालाल छाजेड़ सूरत ने बताया कि पूज्य उपाध्याय श्री ने अपने प्रवचन में कहा की मुझे नवसारी के लोगो से बहुत लगाव है। हमें हमेशा दादा गुरूदेव के बताये मार्ग पर चलना है। कार्यक्रम के बाद सकल श्री संघ की नवकारसी रखी गई।

पूज्य गुरूदेव नवसारी से मुम्बई की तरफ विहार करेंगे। भायंदर, मुम्बई, भिवंडी के कुछ कार्यक्रम सम्पन्न कर गुरूदेव पुनः वापी, नवसारी, सूरत, बड़ौदा, अहमदाबाद, सांचोर, धोरीमन्ना आदि अन्य कई गाँवों से होते हुए मरूधरा के बालोतरा की और विहार करेंगे, जहाँ 2016 का चातुर्मास होगा।

पूज्यश्री के आचार्य पद के उपलक्ष्य में 43 अट्ठम की आराधना

पूज्य गुरुदेव गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के आचार्य पद के उपलक्ष्य में साधु साध्वी मंडल में निश्चय किया गया कि आचार्य 36 गुणों के धारक होते हैं। इस आधार पर 36 तेले होने चाहिये। साधु साध्वियों ने अत्यन्त उल्लास, उत्साह व पूर्ण श्रद्धा के साथ तेले किये। 36 का लक्ष्य था, कुल 43 तेले संपन्न हुए।

पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. मोक्षप्रभसागरजी म. मैत्रीप्रभसागरजी म. मननप्रभसागरजी म. ने तेला किया। साध्वी मंडल में कुल 39 अट्ठम हुए।

महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्याऐं पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म., जिनज्योतिश्रीजी म.

प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की शिष्याऐं पू. साध्वी श्री तत्वदर्शनाश्रीजी म. सम्यग्दर्शनाश्रीजी म., मुदितप्रज्ञाश्रीजी म., शीलगुणाश्रीजी म., सौम्यगुणाश्रीजी म., कनकप्रभाश्रीजी म.

पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्याऐं- पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म., प्रियदिव्यांजनाश्रीजी म. प्रियश्रुतांजनाश्रीजी म. प्रियवर्षांजनाश्रीजी म. प्रियमेघांजनाश्रीजी म. प्रियविनयांजनाश्रीजी म. प्रियमुद्रांजनाश्रीजी म. प्रियमंत्रांजनाश्रीजी म.

पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्याऐं- पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म. प्रेयनंदिताश्रीजी म. श्रेयनंदिताश्रीजी म. विपुलप्रभाश्रीजी म. विरतिप्रभाश्रीजी म.

पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्याऐं- पू. साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म. नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. विभांजनाश्रीजी म. आज्ञांजनाश्रीजी म.

पू. महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्याऐं- पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. हेमरत्नाश्रीजी म. जयरत्नाश्रीजी म. नूतनप्रियाश्रीजी म.

पू. महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्याऐं- पू. साध्वी श्री अमीझराश्रीजी म. अमीपूर्णाश्रीजी म. स्वर्णोदयाश्रीजी म. सत्वोदयाश्रीजी म.

पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्याऐं- पू. साध्वी श्री प्रमुदिताश्रीजी म. धर्मनिधिश्रीजी म. संवेगप्रियाश्रीजी म. भव्यप्रियाश्रीजी म.

इन सभी ने परमानंद और शातापूर्वक अट्ठम तप की आराधना की। साथ ही खरतरगच्छ महा सम्मेलन एवं विविध पदारोहण सह आचार्य पद महोत्सव निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्न हो इस लक्ष्य से समस्त साधु साध्वी मंडल में नवकार महामंत्र, आदिनाथ, स्तंभन पार्श्वनाथ, दादा गुरुदेव, गणनायकजी, अंबिका देवी, भैरवदेवता, पद्मावती देवी आदि के बडी संख्या में जाप किये गये।

साथ ही पिछले तीन महिनों से पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. के मंडल में प्रतिदिन आयंबिल तप हुआ। यह तप विहार में भी अक्षुण्ण रूप से गतिमान रहा। इन साधु साध्वियों के तप व जप के प्रभाव से ही इतना बडा समारोह अत्यन्त आनंद, उल्लास व निर्विघ्न संपन्न हुआ।

पूज्य आचार्यश्री की घोषणा

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने आचार्य पद ग्रहण करने के बाद उपस्थित समस्त आचार्य भगवंतों एवं सकल श्री संघ के समक्ष यह घोषणा की कि समस्त जैन समाज की संवत्सरी एक होनी चाहिये। उन्होंने कहा– यदि तपागच्छ संघ एक तिथि के लिये सहमत हो जाता है, तो हम अपनी परम्परा में बदलाव लाकर भी जैन संघ की एकता के लिये पूर्ण रूप से कटिबद्ध होंगे।

खरतरगच्छ साधु–साध्वी सम्मेलन–२०१६

श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पावन धरा पर पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. के आदेशानुसार १ मार्च, २०१६ से १२ मार्च, २०१६ तक अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासम्मेलन का विराट् आयोजन किया गया।

१ मार्च से ९ मार्च तक चले साधु-साध्वी सम्मेलन में पूज्य आचार्यश्री के साथ पूज्य उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म., पूज्य गणि श्री मणिरत्नसागरजी म. आदि मुनि भगवंत ठाणा १८ एवं पूजनीया महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा ७, पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ठाणा १८, पूजनीया गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. ठाणा ३२, पूजनीया गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म ठाणा २०. पूजनीया माताजी म. श्रमणी रत्ना श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म. ठाणा ११, पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ठाणा १०, पूजनीया साध्वी डॉ. श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. ठाणा ५, पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. ठाणा १८, पूजनीया साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. ठाणा ४, पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. ठाणा ९, आदि विशाल संख्या में साध्वीजी भगवंत सम्मिलित हुए।

इस सम्मेलन में गहन विचार-मन्थन एवं विमर्श पूर्वक सर्वसम्मति से निम्नलिखित निर्णय लिये गये।

निर्णय

नीति–गत निर्णय

01. वर्ष में कोई एक दिन खरतरगच्छ दिवस के रूप में पूरे भारत में विशेष रूप से मनाया जावे। इस हेतु पूज्य गणाधीश महातपस्वी श्री छगनसागरजी म. की पुण्यतिथि का चयन किया गया। उनका स्वर्गवास द्वितीय श्रावण सुदि छठ को हुआ था। अतः निर्णय किया गया कि श्रावण सुदि छठ को **'खरतरगच्छ दिवस'** के रूप में आयोजित किया जाए। इस दिन गच्छ का इतिहास, गच्छ का विकास, सैद्धान्तिक निष्ठा एवं क्रिया प्रणाली आदि विविध विषय प्रचारित किये जाएं।

02. खरतरगच्छ की प्राचीन परम्परा के अनुसार साधु–साध्वी भगवंत योगोद्वहन पूर्वक ही आगम अध्ययन करते रहे हैं। वर्तमान में कुछ वर्षों से कारणवश यह परम्परा स्थगित है। विधिमार्गप्रपा, आचार दिनकर, समाचारी शतक आदि खरतरगच्छीय परम्परा के कितने ही ग्रन्थों में योगोद्वहन की विधि विस्तार से प्राप्त है। अतः यह निर्णय लिया गया कि पूर्वाचार्यों की आज्ञा अनुसार गच्छीय विधि–विधान के अनुसार योगोद्वहन प्रारंभ किये जायें।

03. गच्छ की परम्परानुसार गच्छीय मुनि भगवंतों की अनुपस्थिति में मुमुक्षु बहिन की छोटी दीक्षा साध्वीजी महाराज करवा सकेंगे। गच्छीय मुनि भगवंतों की अनुपस्थिति में अन्यगच्छीय मुनि भगवंतों का योग होने पर उनसे छोटी दीक्षा करवाई जा सकेगी।

04. बड़ी दीक्षा एवं योगोद्वहन गच्छाधिपति से आज्ञा प्राप्त कर पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदायवर्ती गुरु भगवंतों द्वारा ही करवाई जायेगी।

05. तिथि के बारे में चर्चा हुई। प्रस्ताव आया कि बड़ी

तिथि का क्षय करने से बहुत समस्या होती है। जब चतुर्दशी का क्षय होता है, तब उपवास तो चतुर्दशी को किया जाता है, पर प्रतिक्रमण पूनम या अमावस्या को किया जाता है। इस कारण लोग बहुत असमंजस में पड़ जाते हैं। इसके लिये कोई रास्ता निकालना चाहिये, ताकि पर्व तिथि की क्षय व वृद्धि न हो और आराधना में एकरूपता आ सके। इस प्रस्ताव पर पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने कहा– अपनी परम्परानुसार पर्व तिथि की क्षय वृद्धि होती है। यदि सूर्य प्रज्ञप्ति, उत्तराध्ययन सूत्र आदि आगमों के आधार पर जैन पंचांग का निर्माण होता है तो तिथि संबंधी समस्त समस्याएं समाप्त हो जाती हैं, क्योंकि जैन पंचांग के अनुसार किसी तिथि की वृद्धि नहीं होती। दो महीने में एक तिथि का क्षय होता है। इसी प्रकार आषाढ़ और पौष, इन दो मासों की ही वृद्धि होती है। इस प्रकार का जैन पंचांग पूज्य आचार्य श्री जिनजयसागरसूरिजी म. ने पूर्व में बना कर प्रकाशित किया था। उसकी प्रतिलिपि अपने भंडार में मौजूद है। यदि उसे आधार बना कर पंचांग का निर्माण किया जाता है; और वह यदि अपने संघ द्वारा मान्य हो जाता है तो सारी समस्याएं समाप्त हो जायेगी।

निर्णय किया गया कि इस संबंध में प्रवर पर्षदा गंभीरता से विचार कर निर्णय करे।

06. गच्छीय समाचारी व परम्परानुसार प्रतिवर्ष पंचांग का जो प्रकाशन किया जाता है, वह पूज्य गच्छाधिपतिजी द्वारा किया जायेगा।

07. पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. का नाम खरतरगच्छ की पट्ट परम्परा में रहेगा। पूर्व में एक ही पट्ट पर दो आचार्य भगवंतों के बिराजने के उदाहरण प्राप्त हैं। पूज्य गणाधीश श्री हेमेन्द्रसागरजी म. के पट्ट पर पूज्य आचार्य श्री जिनउदयसागरसूरिजी म. एवं पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म. दोनों के नाम पट्टावली में अंकित होंगे।

08. खरतरगच्छ की प्राचीन परम्परा के अनुसार चातुर्मास में श्री सिद्धाचल महातीर्थ की यात्रा की जा सकती है। इसमें किसी भी प्रकार का दोष नहीं है।

09. प्रतिक्रमण आदि विधि में स्तुति, स्तवन व सज्झाय खरतरगच्छ आचार्यों, मुनियों द्वारा रचित ही गा सकेंगे। साथ ही बिना नाम वाली रचनाओं पर भी प्रतिबंध रहेगा। अन्य गच्छीय या बिना नाम वाली रचनाएं प्रवचन में गाई जा सकेंगी।

10. पर्युषण के आठ दिनों में प्रवचन का क्रम इस प्रकार रहेगा– प्रारंभ के दो दिन अष्टाह्निका प्रवचन पढ़ें। तीसरे दिन से कल्पसूत्र का वांचन प्रारंभ करें। पांचवें दिन जन्म वांचन करें। आठवें दिन मूल बारसासूत्र का वाचन काल वेला में करें।

11. बड़ी व्याधि आदि अपरिहार्य परिस्थिति में यदि वाहन के उपयोग की आवश्यकता आ जाये तो पू. गच्छाधिपतिजी से आज्ञा मंगवाकर ही करना होगा। तत्पश्चात् पू. गच्छाधिपतिजी से प्रायश्चित्त लेना होगा।

12. दादा गुरुदेव की पूजा के कुछ स्थल संशोधनीय है। निर्णय किया गया कि उन स्थानों पर पूर्व में पूज्य आचार्य श्री जिनउदयसागरसूरिजी म. के आदेश से जो परिवर्तन किये थे, उस अनुसार ही पूजा की पुस्तकें प्रकाशित की जाएं।

13. साधु–साध्वीजी प्लास्टिक के घड़ों में उष्ण जल लाते हैं। प्लास्टिक एक निकृष्ट पदार्थ है, अतः मिट्टी, लकड़ी या ताम्र के घड़ों का उपयोग किया जावे। साथ ही गच्छ की परम्परानुसार झोली में ही घड़ा रखकर पानी लाया जाए, बिना झोली नहीं।

14. पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा. के समुदाय के साधु–साध्वीजी भगवंतों की निश्रा में होने वाले कार्यक्रमों की जो आमंत्रण पत्रिकाएं प्रकाशित हों, उनमें तीर्थंकरों, गणधरों, दादा गुरुदेवों अथवा साधु–साध्वीजी भगवंतों के फोटो प्रकाशन पर प्रतिबंध लगाया जाता है। आशातना अक्षरों की भी है, अतः निर्णय लिया गया कि पत्रिकाएं कम छपें, अनिवार्य ही छपें। उनकी संख्या भी कम हो।

15. दूध से गुरु भगवंतों के चरणों का प्रक्षाल करना बंद किया गया।

16. कंकु के पगले बंद किये गये। केसर या चन्दन के पगले हो सकेंगे।

17. प्रवचन प्रारंभ से पूर्व पू. गणनायकजी की स्तुति 'वंदन हो मेरा' बोलना अनिवार्य है।

18. पदारोहण के अवसर पर केसर के छांटने किये जा सकेंगे। साथ ही दीक्षा के अवसर पर दीक्षार्थी

भाई–बहिन ही केसर के छांटने कर सकेंगे। अन्यत्र निषिद्ध है।

19. एक साथ एक उपवास का ही पच्चक्खाण हो सकता है। इससे अधिक नहीं। समाचारी शतक की 16वीं समाचारी में शास्त्र प्रमाणों के साथ एक से अधिक उपवास के पच्चक्खाण एक साथ कराने का निषेध किया गया है। आवश्यक सूत्र में एक उपवास के प्रत्याख्यान का ही पाठ है–

'सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाई' इत्यादि परं न तु एवं यदुत 'सूरे उग्गए चउत्थं पच्चक्खाइ एवं छट्ठभत्तं अट्ठमभत्तं यावत् चउतीसभत्तं'।

20. खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा में गुरु भगवंतों की नवांगी पूजा हो सकती है। पर देश काल को देखते हुए निर्णय लिया गया कि पदारोहण व अंजनशलाका के अतिरिक्त अन्यत्र नवांगी पूजन नहीं होगा।

21. वर्षीदान में खुले चावल आदि उछालना निषिद्ध होगा। किसी एक स्थान पर मुमुक्षु सम्मान के साथ वर्षीदान की सामग्री हाथ जोड़ कर अर्पण कर सकेगा। पर उछालने पर प्रतिबंध होगा।

22. गुरु भगवंतों को चावलों से बधाने की परम्परा है। परम्परा का त्याग भी न हो तथा चावलों का अपव्यय भी न हो, अतः अल्पतम गिनती के चावलों से ही गुरु भगवंतों को बधाया जा सकेगा।

23. चातुर्मास हो अथवा विहार, गुरु या वडील अपने निश्रारत मुनि अथवा साध्वियों को कम से कम आधा घंटा सामूहिक वांचना अवश्य दें।

24. साधु–साध्वियों को लगने वाले दोषों का प्रायश्चित्त लेना अनिवार्य है। इसके लिये 'श्रमण आलोचना' नामक पुस्तक प्रकाशित है। उसे प्रति माह भर कर पूज्य गच्छाधिपतिजी के पास भेज कर आलोचना लेना अनिवार्य है।

25. साधु–साध्वियों में परस्पर वंदन–व्यवहार दीक्षा–पर्याय के आधार पर होगा, पद के आधार पर नहीं।

26. साधु व श्रावक के बीच एक मध्य श्रेणि की स्थापना का निर्णय लिया गया। जिसे नाम दिया– साधक–साधिका! ये वाहन का उपयोग कर सकेंगे। धर्म प्रचार हेतु विदेश जा सकेंगे। ये एक निश्चित समयावधि पर्यन्त गच्छ को अपनी सेवाएं देंगे। ये साधक–साधिका गच्छाधिपति के प्रति समर्पित होंगे। प्रवर पर्षदा इस संबंध में विचार कर पूरा प्रारूप, इनकी भूमिका, शिक्षा, योग्यता आदि का निर्धारण करेगी।

27. साधु–साध्वियों का पाठ्यक्रम बनाना तय किया गया। इसके लिये 9 वर्ष का डिग्री कोर्स बनेगा। प्रवर पर्षदा को यह उत्तरदायित्व सौंपा गया। प्रथम तीन वर्ष का पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर उन्हें श्रुत भास्कर पद से, अगले तीन वर्ष का पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर उन्हें श्रुत प्रभाकर पद से तथा अगले तीन वर्ष का पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर उन्हें श्रुत रत्नाकर पद से विभूषित किया जायेगा। इस पाठ्यक्रम में कोई भी भाग ले सकेगा।

28. निर्णय किया गया कि संपूर्ण भारत में खरतरगच्छ की पाठशालाएं एक ही नाम से चलेंगी। नाम रहेगा– ज्ञान वाटिका! और कोई नाम नहीं जोड़ा जायेगा। प्रेरणा दाता के नाम का उल्लेख हो सकेगा। साथ ही यह भी तय किया गया कि समस्त पाठशालाओं में एक ही पाठ्यक्रम चलेगा। जब तक पाठ्यक्रम का निर्माण नहीं होता, तब तक जो पाठ्यक्रम चल रहा है, वह जारी रहेगा।

29. भविष्य में जो भी संस्था बने, चाहे युवा परिषद् बने, महिला परिषद् बने, बाल परिषद् बने या कोई मंडल बने, उन सभी का नाम एक ही होगा। हर नाम के साथ खरतरगच्छ शब्द जोड़ा जायेगा। जैसे– खरतरगच्छ महिला परिषद्, खरतरगच्छ बाल परिषद्! ताकि संस्थाओं में एकरूपता व सामंजस्य हो।

30. भविष्य में गच्छ का जो भी उपाश्रय बने, उसका नाम एक ही होगा– श्री खरतरगच्छ आराधना भवन!

31. पूज्य आचार्यश्री की अनुमति से ही पुस्तकों का प्रकाशन किया जायेगा। ताकि अनावश्यक पुस्तकों का प्रकाशन न हो।

32. देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, साधारण द्रव्य आदि का निर्णय किया गया। इसकी एक स्वतंत्र पुस्तिका प्रकाशित की जायेगी।

33. गच्छाधिपति द्वारा समुदाय संबंधी समस्त निर्णय लेने हेतु विचार–विमर्श व सलाह के लिये प्रवर पर्षदा का गठन किया गया।

वर्तमान प्रवर पर्षदा के सदस्य–

– उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म.
– गणी श्री मणिरत्नसागरजी म.
– महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.
– प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.
– गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म.
– गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.
– बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.
– साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.
– साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.
– साध्वी डॉ. श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म.
– साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म.
– साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म.

34. भविष्य में गच्छाधिपति अपने देश–काल–भाव के आधार पर प्रवर पर्षदा का पुनर्गठन कर सकेंगे।

35. साधु–साध्वियों को पद प्रदान करने का अधिकार पूज्य गच्छाधिपति आचार्य के पास सुरक्षित होगा। वे प्रवर पर्षदा की सलाह से पद प्रदान करेंगे।

36. निर्णय लिया गया कि पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में आचार्य एक ही होंगे और वे ही गच्छाधिपति किंवा गणाधीश होंगे।

37. उचित समय में वर्तमान आचार्यश्री प्रवर पर्षदा से राय कर परम्परा व योग्यता को ध्यान में रखते हुए अपना उत्तराधिकारी घोषित करेंगे।

38. समस्त भारत के खरतरगच्छ श्री संघों की एक प्रतिनिधि संस्था गठित हो। जिसका नाम रहेगा– श्री अखिल भारतीय जैन श्वे. खरतरगच्छ प्रतिनिधि सभा! उसमें पूरे भारत के खरतरगच्छ श्री संघों के प्रतिनिधियों का समावेश किया जायेगा।

प्रतिक्रमण संबंधी निर्णय

39. प्रतिक्रमण ठाने का पाठ बोलने से पहले कई स्थानों पर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिय या राइय पडिक्कमण ठाउं. इच्छं' यह पाठ बोला जाता है। इस विषय पर विचार कर निर्णय किया गया कि यह पाठ नहीं बोला जाये। क्योंकि यह पाठ बोलने का आदेश किसी भी समाचारी ग्रन्थ में नहीं है। तपागच्छीय प्रतिक्रमण हेतु गर्भ में भी यह वाक्य बोलने का नहीं लिखा है।

प्रतिक्रमण समाचारी में श्री समयसुन्दरजी म. ने लिखा है–

सव्वस्सवि देवसिअ इत्यादि पठति, परं इच्छाकारेण संदिसह इति पदं न पठति।

इस शास्त्र पाठ के आधार पर यह तय किया गया कि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिय पडिक्कमण ठाउं' यह पद न बोला जाये।

40. प्रतिक्रमण ठाने की मुद्रा के बारे में विचार–विमर्श किया गया। वर्तमान में दाहिने हाथ की मुट्ठी बंद कर रजोहरण, चरवले या आसन पर स्थापित कर बायें हाथ में गृहीत मुँहपत्ति मुख के आगे रख कर 'सव्वस्सवि.' का पाठ बोला जाता है।

इस संदर्भ में शास्त्र पाठ देखे गये। महोपाध्याय समयसुन्दर कृत समाचारी शतक, महोपाध्याय क्षमाकल्याण कृत साधु विधि प्रकाश आदि ग्रन्थों में इसकी मुद्रा लिखी है।

श्री तरूणप्रभाचार्य कृत षडावश्यक बालावबोध का प्रमाण देते हुए महोपाध्याय श्री समयसुन्दरजी म. समाचारी शतक के 84वें प्रश्न के उत्तर में लिखते हैं–

...पश्चात् भून्यस्तमस्तको मुखवस्त्रिकां मुखे दत्वा करद्वयं योजयित्वा सव्वस्सवि देवसिअ. इत्यादि पठति...।

– नतमस्तक होकर मुख के आगे मुँहपत्ति रखते हुए अपने दोनों हाथ संपुट की मुद्रा में बना कर सव्वस्सवि. बोलें।

सारे शास्त्र पाठ देख कर यह निर्णय किया गया कि कर संपुट बना कर प्रतिक्रमण ठाने का पाठ बोला जाए।

41. 'आयरिय उवज्झाए' यह गाथा त्रिक श्रावकों के लिये हैं। इस प्रकार का विधान आचार्य हेमचन्द्रसूरि ने योगशास्त्र के चतुर्थ प्रकाश की स्वोपज्ञ टीका में स्पष्ट किया है–

दाउण वंदणं तो, पणगाइसु जइसु खामए तिन्नि। किइकम्मं किरिअ ठिओ, सड्ढो गाहातिगं पढई।।16।।

आचार्य श्री जिनवल्लभसूरि महाराज ने अपनी समाचारी में इस गाथा का उद्धरण देते हुए साधुओं के लिये

गाथात्रिक बोलने का निषेध किया है। इसी प्रकार आचार्य श्री जिनपतिसूरि, जो मणिधारी जिनचन्द्रसूरि के पट्ट पर बिराजमान हुए, उन्होंने 69 बोल रूप समाचारी के प्रथम बोल में लिखा है–

आयरिय उवज्झाए इच्चाइगाहातिगं पडिक्कमणे साहुणो न भणंति।।1।।

इत्यादि पाठों के आधार पर निर्णय किया गया कि आयरिय उवज्झाए यह गाथा त्रिक साधु–साध्वी न बोलें।

42. आगाढे आसन्ने आदि 24 मांडले चार महीने ही करना चाहिये या 12 महीना?इस विषय पर विचार–विमर्श कर कल्पसूत्र का मूल पाठ व आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा वि. 1976 मिगसर सुदि 3 कोटा नगर में लिखे गये प्रस्ताव नं. 10 के अनुसार यह निर्णय किया गया कि मांडले चौमासे में ही किये जायें, बारह महीने नहीं।

43. स्थापनाचार्यजी में तीन मुहपत्ति, दो बंधन व एक झोली हो। इससे न्यूनाधिक निषिद्ध है।

44. सुबह प्रतिक्रमण, प्रतिलेखना की विधि संपन्न होने के बाद सज्झाय व उपयोग विधि होती है। तय किया गया कि सज्झाय व उपयोग विधि सामूहिक रूप से ही हो, एकाकी नहीं।

45. आचार्य जिनहरिसागरसूरि द्वारा वि. सं. 1976 मिगसर सुदि 3 कोटा नगर में लिखे गये प्रस्ताव नं. 5 के अनुसार असज्झाय तिथि, चार महाप्रतिपदा, प्रतिदिन संधिकाल में यदि सज्झाय विधि की जाती है तो धम्मो मंगल की सज्झाय के स्थान पर असज्झाय होने के कारण तीन नवकार मंत्र गिनें।

46. आचार्य जिन हरिसागरसूरि के कोटा प्रस्ताव के अनुसार चार महाप्रतिपदा को वायणा का आदेश नहीं लेना चाहिये। अन्य प्रतिपदाओं को वायणा का आदेश लिया जाना चाहिये।

47. राइ व देवसी कब बोला जाये, कब तक बोला जाये। इस विषय पर विशद चर्चा विचारणा हुई। वर्तमान में दोपहर बारह बजे तक राइ व रात्रि बारह बजे तक देवसी बोलने की परम्परा है। ए. एम. व पी. एम. वाला विधान तो अंग्रेजों से आया प्रतीत होता है।

इस विषय में शास्त्र पाठ की गवेषणा की गई। समाचारी शतक के 67वें प्रश्न में इस शंका का समाधान उपलब्ध है। उसमें आवश्यक चूर्णि का प्रमाण दिया गया है। यह पाठ चूर्णि के तीसरे अध्ययन में है। पाठ इस प्रकार है–

एवं देवसिओ वंदणग विहाणं भणियं। रत्ति माइसुवि, जेसु ठाणेसु दिवसग्गहणं तत्थ राईगादी वि भणियव्वा। पादोसिए जाव पोरसी न उग्घाडेइ ताव देवसिअं भण्णई, पुव्वण्हे जाव पोरिसी न उग्घाडेइ ताव राइअव्वं। इत्यादि।।67।।

इस पाठ से यह स्पष्ट है कि प्रातः काल जब साधु–साध्वियों की उग्घाडा पोरिसी की विधि होती है, तब तक राईअ तथा रात्रि में संथारा पोरिसी तक देवसिअ शब्द का प्रयोग करना चाहिये।

अतः इन सब पाठों के आधार पर यह निर्णय किया गया कि प्रातः 9 से रात्रि 9 तक देवसिअ तथा रात्रि 9 से प्रातः 9 तक राइअ शब्द का उच्चारण किया जाए। यदि कोई व्यक्ति प्रातः 9 बजे के पश्चात् राइ प्रतिक्रमण करता है, तो वह कर सकेगा। परन्तु प्रतिक्रमण करते समय देवसिय न बोल कर राइ शब्द का ही प्रयोग होगा। इसी प्रकार यदि रात्रि 9 बजे के बाद देवसिय प्रतिक्रमण करता है तो उस समय राइ शब्द न बोल कर देवसिय शब्द का ही प्रयोग करना होगा।

48. प्रातः व सायं प्रतिक्रमण के लिये शास्त्र आज्ञानुसार समय का निर्धारण किया गया। शाम का प्रतिक्रमण सूर्यास्त के आसपास प्रारंभ हो ही जाना चाहिये। व प्रातः प्रतिक्रमण सूर्योदय के आसपास पूर्ण हो, इस ढंग से प्रारंभ करें।

49. दैवसिक प्रतिक्रमण में जयतिहुअण चैत्यवंदन वडील को ही बोलने का अधिकार है। पाक्षिक, चौमासी व संवत्सरी प्रतिक्रमण में 5 गाथा वडील बोलेंगे, तत्पश्चात् शेष 25 गाथा बोलने का छोटे साधु साध्वियों को आदेश दे सकेंगे।

50. स्तुति {थुई} एक ही व्यक्ति बोले, शेष कायोत्सर्ग की मुद्रा में श्रवण करें।

51. कायोत्सर्ग सबसे पहले वडील पारेंगे, तत्पश्चात् दूसरे पारें।

52. प्रतिक्रमण में कम से कम 11 गाथा का स्तवन बोलने का विधान है। निर्णय किया गया कि 9 गाथा का

स्तवन विधि सम्मत माना जायेगा। श्री आनंदघनजी व श्री देवचन्द्रजी द्वारा रचित स्तवनों के लिये यह नियम लागू नहीं है। वह छोटा होगा तो भी चलेगा। 9 गाथा से कम गाथाओं का स्तवन होने पर ओम् वरकणय. गाथा बोलनी होगी।

53. पूर्वाचार्यों की सुविहित परम्परानुसार **नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः** यह पाठ साधु व श्रावक ही बोलें। साध्वीजी म. व श्राविकाओं के लिये बोलना निषिद्ध है।

54. गुरु महाराज को द्वादशावर्त्त वंदन विधि आवश्यक विधि संग्रह, साधु विधि प्रकाश आदि ग्रन्थों के आधार पर इस प्रकार तय की गई– इरियापथिकी करके, राई या देवसी मुहपत्ति का प्रतिलेखन करें। दो वांदणे देकर खमासमण पूर्वक राईअं या देवसिअं आलोउ. का आदेश लेकर जो मे राइओ अइयारो. का पाठ बोलें। तत्पश्चात् वडील सव्वस्सवि का पाठ दुच्चिंतिय तक बोलें। शेष सभी इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बोलें। गुरु महाराज द्वारा पडिक्कमेह कहने पर सभी इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडम् बोलें। पश्चात् दो वांदणे देकर दो खमासमण, इच्छकार. खमासमण देकर अब्भुट्ठियो का पाठ बोलें। दो वांदणे देकर पच्चक्खाण करें।

55. श्रावकों के दैनिक अतिचार पाठ में जो ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी वाला पाठ है, उसमें परम्परानुसार 'भक्तकथा' बोली जाती है। 'भक्तकथा' शब्द से कई लोगों में भ्रम पैदा होता है। उस भ्रम का निवारण करने के लिये तय किया गया कि 'भक्तकथा' के स्थान पर 'भोजन कथा' बोला जाए।

56. प्रातः प्रतिक्रमण में देववंदन से पूर्व जो चैत्यवंदन बोला जाता है, साध्वीजी भगवंतों में भिन्नता दिखाई देती है। कोई परसमय. बोलते हैं, कोई संसार दावा! निर्णय किया गया कि साध्वीजी संसार दावा का ही चैत्यवंदन बोलें।

57. प्रातः प्रतिक्रमण में सकल तीर्थ नमस्कार के लिये सद्भक्त्या. की 10 गाथात्मक स्तुति बोली जाती है। इसकी रचना अन्यों द्वारा हुई है, ऐसा ज्ञात हुआ है। अतः निर्णय किया गया कि इसके स्थान पर तीर्थ वंदना भावे सार. वाली स्तुति बोली जाए।

58. दैवसिक प्रतिक्रमण सामूहिक करना तय किया गया। अर्थात् सारे साधु एक ही मांडली में सामूहिक रूप से प्रतिक्रमण करेंगे। बीमारी आदि विशेष परिस्थिति में यदि अलग प्रतिक्रमण करना हो तो गुरु या वडील की आज्ञा से कर सकेंगे। इसी प्रकार सभी साध्वीजी सामूहिक रूप से प्रतिक्रमण करेंगे। राइ प्रतिक्रमण एक ही मांडली में व्यक्तिगत रूप से करें।

59. प्रतिक्रमण में प्रारंभ से पूर्णता तक मौन रहना निश्चित किया गया। कैसा भी कार्य हो! कोई भी व्यक्ति आया हो! प्रतिक्रमण बीच में छोड़ कर अन्य कोई वार्तालाप आदि कार्य न करें।

60. पाक्षिक प्रतिक्रमण में साधुओं व श्रावकों के अतिचार पाठ में आवश्यक परिवर्तन करना तय किया गया, यह कार्य प्रवर पर्षदा की अनुमति से होगा।

61. प्रतिक्रमण के प्रारंभ में जयतिहुअण व जयउ सामिय का जो चैत्यवंदन किया जाता है, उस संदर्भ में दो परम्पराएं चल रही है। कहीं एक खमासमणा दिया जाता है, कहीं तीन! इस संदर्भ में शास्त्र पाठ देखे गये। श्री साधु विधि प्रकाश, आवश्यकीय विधि संग्रह आदि के आधार पर निर्णय किया गया कि एक खमासमणा ही दिया जाए। देववंदन की विधि में प्रथम चैत्यवंदन से पूर्व एक एवं दूसरे चैत्यवंदन से पूर्व तीन खमासमणे देने की परम्परा है।

जिन मंदिर में एक शक्रस्तव से चैत्यवंदन विधि की जाती है, उसमें चैत्यवंदन से पूर्व तीन खमासमणे दिये जाएं।

62. संवत्सरी के प्रतिक्रमण में दादा श्री जिनकुशलसूरि द्वारा रचित स्तुति 'द्रें द्रें कि' ही बोलना।

63. नवपद ओली के प्रारंभ के तीन दिनों में अलग–अलग परम्परा चल रही है। कहीं तीनों दिन अजित शांति बोली जाती है। कहीं एक दिन उल्लासि. व एक दिन अजित शांति इस प्रकार बोलने का रिवाज है। विचार–विमर्श कर निर्णय किया गया कि इन दिनों में मांगलिक प्रतिक्रमण करने की आवश्यकता नहीं है। स्तुति, स्तवन व सज्झाय बोल सकते हैं।

64. पाक्षिक सूत्र एक साधु या साध्वीजी बोलते हैं, तब अन्य साधु–साध्वी व साथ में प्रतिक्रमण कर रहा सकल संघ कायोत्सर्ग की मुद्रा में श्रवण करता है। उस समय पाक्षिक सूत्र बोलने से पूर्व करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं. बोलना है। तत्पश्चात् जिसने पाक्षिक सूत्र का आदेश प्राप्त किया है, वह प्रथम

खमासमण द्वारा पक्खी या चौमासी या संवच्छरी सूत्र संदिसाउं का आदेश लेता है। दूसरे खमासमण द्वारा पक्खी सूत्र कड्ढूं का आदेश प्राप्त कर पाक्षिक सूत्र बोलना प्रारंभ करता है। वह बोलना प्रारंभ करे, इससे पूर्व दूसरा साधु या साध्वी तस्स उत्तरी. अन्नत्थ. बोलता है, सभी कायोत्सर्ग मुद्रा में पाक्षिक सूत्र श्रवण करते हैं।

इस प्रकार का विधान समाचारी शतक की 72वीं समाचारी में किया गया है।

65. संवत्सरी के दिन श्रुत देवता, भवन देवता व क्षेत्र देवता का कायोत्सर्ग अवश्य करें।

66. पाक्षिक, चौमासी व संवत्सरी प्रतिक्रमण में बड़े अतिचार बोलने के बाद सव्वस्सवि बोली जाती है। वहाँ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बोलने पर गुरु या वडील क्रमशः चउत्थेण, छट्ठेण व अट्ठमेण पडिक्कमेह ऐसा बोलें।

67. प्रतिक्रमण में दादा गुरुदेव के कायोत्सर्ग में प्रथम कायोत्सर्ग में दादा जिनदत्तसूरि के साथ मणिधारी जिनचन्द्रसूरि तथा जिनकुशलसूरि के साथ चतुर्थ दादा जिनचन्द्रसूरि का नाम अवश्य लें।

68. मुंहपत्ति प्रतिलेखना की विधि में कुछ अन्तर देखा जाता है, उस संबंध में साधु विधि प्रकाश, आवश्यकीय विधि संग्रह एवं खरतरगच्छीय श्री लक्ष्मी वल्लभ गणि द्वारा रचित मुहपत्ति पडिलेहन की प्राचीन सज्झाय के आधार पर निर्णय किया गया। इसके अन्तर्गत 25 बोल मुहपत्ति प्रतिलेखना के तथा 25 बोल अंग प्रतिलेखना के हैं। इनमें से प्रारंभ के 7 बोल मुहपत्ति खोल कर हल्के से झटकाते समय बोलने चाहिये। उसके बाद 18 बोल बांयें हाथ पर 3–3 के गुच्छक में बाहर से भीतर और भीतर से बाहर की ओर बोलने चाहिये।

इसके बाद अंग प्रतिलेखना के बोल प्रारंभ होते हैं। क्रमशः 3 बोल बांयें हाथ, 3 बोल दांयें हाथ, 3 बोल ललाट, 3 बोल मुख, 3 बोल हृदय, 2 बोल दांये स्कन्ध व कांख, 2 बोल बायें स्कन्ध व कांख, 3 बोल दांयें पांव व 3 बोल बांयें पांव की प्रमार्जना करते हुए बोलने चाहिये। महिलाओं के ललाट, हृदय, स्कन्ध व कांख के इस प्रकार 10 बोल नहीं होते। साध्वीजी भगवंतों के हृदय, स्कन्ध व कांख के इस प्रकार 7 बोल नहीं होते।

समाचारी संबंधी निर्णय

69. भोजन में पालक के उपयोग का वर्जन है।

70. पौषध उपवास से ही होता है। ऐसा शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख है। खरतरगच्छ की परम्परा भी यही है। उपधान तप को छोड़ कर आयंबिल या एकासणा आदि से पौषध नहीं होता है।

तत्वार्थभाष्यवृत्ति का पाठ– **पौषधोपवास नाम इत्यादिना पौषधस्वरूपं निरूपयति, रूढ्या पौषधशब्दः पर्वसु वर्तते, पर्वाणि च अष्टम्यादितिथयः पूरणात् पर्व धर्मोपचय–हेतुत्वात्, तत्र– पौषधे पर्वणि उपवासः पौषधोपवासः त्रिविधस्य चतुर्विधस्य वाहारस्य छेदः इत्यादि।**

समवायांगसूत्र की वृत्ति में आचार्य अभयदेवसूरि ने लिखा है– **पौषधं पर्वदिनं अष्टम्यादिः तत्रोपवासोभक्तार्थः पौषधोपवासः।**

71. आयंबिल बिना नमक से ही होता है। यदि नमक का उपयोग करना हो तो आयंबिल के स्थान पर नीवीं का पच्चक्खाण किया या कराया जाए।

आगम मान्यता के अनुसार आयंबिल में दो द्रव्य ही लेने चाहिये–

महानिशीथ सूत्र व चूर्णि में लिखा है– **दोहिं दव्वेहिं आयंबिलेहिं।**

आचार्य हरिभद्रसूरि कृत आवश्यकबृहद्वृत्ति का पाठ– **एवं जहन्ने मज्झिमे उक्कोसेवि आयंबिले दव्वदुगेण सव्वत्थ भणिअव्वं।**

दादा जिनदत्तसूरि ने संदेह दोलावली ग्रन्थ में लिखा है– **गिहिणो इह विहि आयंबिलस्स कप्पंति दुन्नि दव्वाइं। एगं समुचिअमन्नं, बीअं पुण फासुअं नीरं।।104।।**

इस आधार पर मात्र दो द्रव्य ही लेने कल्पते हैं। जिनमें एक समुचित अन्न व दूसरा पानी कल्पता है। नमक आदि अन्य द्रव्य आयंबिल में नहीं कल्पते हैं। नमक आदि ग्रहण करना हो तब उन्हें आयंबिल का पच्चक्खाण नहीं करना चाहिये। पच्चक्खाण भंग का दोष लगता है। नीवीं का पच्चक्खाण लेना चाहिये।

72. हर अमावस्या व पूर्णिमा को नंदीश्वर द्वीप के चैत्यवंदन का विधान है। ऐसा समाचारी शतक के

व्यवस्था पत्रक के 28वें बिन्दु में लिखा है–

पूर्णिमामावास्योः नन्दीश्वरदेववन्दनम् ।।28।।

अतः तय किया गया कि प्रत्येक पूर्णिमा और अमावस्या को बड़े देववंदन किये जायें।

73. जिन मंदिर में प्रतिदिन देववंदन करने चाहिये। ऐसा विधान आचार्य जिनपतिसूरि ने अपनी 57वीं समाचारी में किया है–

पइदिणं संपुण्णचियवंदणा देवालए।।57।।

षट् पर्व– दो अष्टमी, दो चतुर्दशी, पूर्णिमा व अमावस्या को देववंदन करना अनिवार्य है।

74. कोई भी पुस्तकादि सामग्री वहोरना हो तो अपने गुरु या वडील की आज्ञा प्राप्त कर ही ग्रहण करें।

75. साधु साध्वीजी केला व नारियल का पानी तत्काल वहोर सकेंगे।

76. साधु–साध्वियों के जन्म–दिवस या दीक्षा–दिवस सामूहिक आराधना, संयम गुणगान, गुणानुवाद आदि के रूप में मनाये जा सकेंगे। आडम्बर न हो, इसका विवेक जरूरी है।

77. प्रतिपदा, अष्टमी व चतुर्दशी को नई गाथा की वांचना नहीं देना।

78. जावंति चेइयाइं व जावंत केवि साहु के बीच खमासमण बोलना या नहीं बोलना, इस विषय में भिन्नता नजर आ रही है। इस संदर्भ में समाचारी शतक, प्रतिक्रमण समाचारी आदि ग्रन्थों के आधार पर निर्णय किया गया कि जावंति चेइयाइं के बाद खमासमण देना विधि सम्मत है।

महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी रचित श्री साधु विधि प्रकाश में लिखा है–...**शक्रस्तवं जावंति चेइयाइं इति गाथां च भणित्वा क्षमाश्रमणपूर्वं जावंत केविसाहू इति गाथां नमो....।**

अतः बोलना तय किया गया।

79. जिन मंदिर में चैत्यवंदन से पूर्व सकलकुशलवल्ली. बोलना अनिवार्य नहीं है। क्योंकि इस प्रकार का विधान नहीं है।

80. प्रतिदिन सप्त स्मरण व जयतिहुअण का पाठ यथासंभव दो बार अवश्यमेव करना चाहिये। कैसी भी स्थिति में एक बार करना अनिवार्य किया गया।

81. अस्वाध्याय/अनध्याय दिवसों को छोड़ कर दशवैकालिक के चार अध्ययन का पाठ प्रतिदिन करना अनिवार्य है। पाठ किये बिना आहार पानी ग्रहण न करें।

82. प्रतिदिन दो माला नवकार मंत्र की जपना अनिवार्य किया गया। एक माला फेरे बिना आहार पानी ग्रहण न करें। दूसरी माला दिन में कभी भी सुविधानुसार फेरें।

83. ओछाया में जाते समय पूरी कामली का ही प्रयोग करें। ताकि सारे अंग आच्छादित हो सकें। छोटे पलिये का प्रयोग निषिद्ध किया गया।

84. ओघारिया, रूमाल, कामली, मुहपत्ति आदि में जो रंगीन धागों का प्रयोग कहीं–कहीं नजर आता है, वह निषिद्ध किया गया।

85. खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा में त्रिफला के जल के उपयोग का विधान है। प्रवचन सारोद्धार के अनुसार प्रासुक जल का काल भी गरम पानी जितना ही बताया गया है–

उसिणोदगं तिदंडुक्कलिअं फासुअजलंति जइकप्पं। नवरि गिलाणाइकए, पहरतिगोवरिवि धरिअव्वं।।881।।

जायइ सचित्तया से गिम्हंमि पहरपंचगस्सुवरि। चउपहरोवरि सिसिरे, वासासु पुणो पिहरूवरिं।।882।।

अतः त्रिफला का जल उपयोग में आ सकेगा।

86. प्रतिक्रमण में स्तवन व सज्झाय सामूहिक रूप से बोल सकेंगे।

87. ओघे की दशियां पूरी बंटी हुई न हों, एक तिहाई भाग ही बंटा हुआ होना चाहिये। तभी जयणा का पालन व्यवस्थित रूपेण हो सकता है।

88. सूर्यास्त के पश्चात् उपाश्रय में विजातीय प्रवेश निषिद्ध किया गया।

89. अनध्याय दिवसों में दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि रचित संदेह दोलावली के गाथा 113– 118 के अनुसार उन उन सूत्रों का स्वाध्याय करना निषिद्ध है।

90. कपड़े के बने पदस्त्राण/पादरक्षक का उपयोग अपने विवेक व स्थिति के अनुसार करें।

91. मोबाईल का उपयोग साधु–साध्वियों के लिये वर्जित है। वे न प्रयोग करें, न करावें। विहार आदि के कारण संदेश आदि देने के लिये तीव्र आवश्यकता प्रतीत होने पर सेवाधारी श्रावक, श्राविका या व्यक्ति के माध्यम से समाचार प्रदान करें। स्वयं वार्तालाप न करें। तथापि वर्तमान में देश काल को देखते हुए अत्यन्त अनिवार्य अपरिहार्य स्थिति में मंडल–प्रमुख स्पीकर का उपयोग कर सकेगा। पर उसका प्रायश्चित लेना अनिवार्य होगा। व्यवहार शुद्धि का विवेक अनिवार्य रूप से रखना होगा।

92. सूर्य चन्द्र ग्रहण काल में साधु–साध्वी बाहर न पधारें। पर पहले से लाया हुआ आहार पानी ले सकते हैं।

93. गोचरी के संबंध में मर्यादा का निर्णय किया गया। गांव में जहाँ श्रावकों के घर हों, वहाँ सामने से लाया हुआ आहार न लें। विहार आदि में यह प्रतिबंध लागू नहीं होगा।

94. महोपाध्याय श्री समयसुन्दरजी महाराज ने विशेष शतक के 53वें प्रश्नोत्तर में एवं समाचारी शतक की 54वीं समाचारी में सिंघाड़े के उपयोग का निषेध किया है। अतः इसका त्याग किया गया।

95. वस्त्र प्रक्षालन में आला नामक रसायन का उपयोग किया जाता है। वह तेजाब सरीखा केमिकल है। यह जीव हिंसा का निमित्त है। अतः इसके उपयोग पर प्रतिबंध लगाया गया।

96. जूठे मुंह बोलना, ज्ञानावरणीय कर्म बंधन का कारण है। अतः गोचरी करते समय मौन रहना अनिवार्य किया गया। पानी पीकर भी तभी बोले, जब अत्यन्त आवश्यक हो।

97. बेर तुच्छ फल है, उसका निषेध किया गया।

98. कच्ची चासनी वाली मिठाई का समारोहों में निषेध किया गया। क्योंकि वह कच्ची चासनी जीवहिंसा का निमित्त है। जहाँ कच्ची चासनी से पुनः शक्कर बनाई जाती है, वहाँ उपयोग हो सकेगा।

99. गुरुवंदन की विधि में भिन्नताएं देखी जाती हैं। गुरु महाराज को वंदन करते समय पहले दो खमासमणे देना या तीन! इस विषय पर शास्त्र पाठ के आधार पर निर्णय किया गया कि इच्छकार से पूर्व दो खमासमणे ही बोले जायें, क्योंकि आचार्य जिनपतिसूरि ने स्वरचित समाचारी में इसका स्पष्ट उल्लेख किया है–

खमासमण दुगंतराले इच्छकार सुहदेवसि अ सुहराइ अ पुच्छा।।7।।

इसी प्रकार महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी ने अपने ग्रन्थ साधु विधि प्रकाश में भी यही बात लिखी है–

तत उचितवेलायां साधवः क्षमाश्रमणद्वयेन गुरूं वन्दित्वा तद्द्वयान्तराले इच्छकार सुहदेवसी सुख तप शरीर निराबाध संयमयात्रा सुखे निरवहे दे जी?छे पूज्यसाता इति सुखप्रश्नमापृच्छ्य यथा रत्नाधिकतया शेषसाधूनभिवन्द्य मण्डल्यां.....।

इच्छकार के बाद पदस्थ या पर्याय स्थविर को एक खमासमण देकर अब्भुट्ठियो का पाठ बोलना चाहिये, तत्पश्चात् एक खमासमण देना चाहिये।

100. दादा जिनदत्तसूरि रचित संदेह दोलावली, श्री समयसुन्दरजी म. द्वारा रचित विशेष शतक, श्रीमद् देवचन्द्र रचित विचार रत्न सार आदि ग्रन्थों के आधार पर यह निर्णय किया गया कि विद्युत् के प्रकाश में यदि चन्द्रमा का प्रकाश मिश्रित हो जाता है तो वह प्रकाश अचित्त है।

101. रजोहरण की प्रतिलेखना प्रतिदिन दो बार अवश्य करनी चाहिये। पर कैसी भी स्थिति हो, एक बार अनिवार्य है।

102. डंडासण व पूंजणी की खोल कर प्रतिलेखना पन्द्रह दिन में एक बार करना अनिवार्य है।

103. जो भी उपधि अपनी नेश्राय में है, चाहे उपयोग हो रहा हो या नहीं हो रहा हो, वर्ष भर में एक बार उस संपूर्ण उपधि की प्रतिलेखना अनिवार्य है।

104. प्रथम प्रहर में वहोर कर लाया हुआ आहार चौथे प्रहर में उपयोग नहीं आता। ठीक उसी प्रकार प्रथम प्रहर में वहोरा हुआ पानी भी चौथे प्रहर में पीने के काम नहीं आ सकता। उस पानी का अन्य उपयोग हो सकता है।

105. प्रतिदिन दो बार काजा लेना होता है। जबकि चातुर्मास के दिनों में तीन बार लेना अनिवार्य है।

106. सर्दी के दिनों में ओढ़ने के लिये कमलियों का ही उपयोग करना चाहिये। यदि कंबल लेना ही हो तो सफेद या क्रीम कलर का लें। रंगीन कंबल वर्जित है।

107. विहार कर दिया हो और बाद में कोहरा छा जाए तो विहार वहीं पर स्थगित कर एक स्थान पर बैठ जायें, पर विहार न करें।

108. श्रमण सूत्र {पगामसिज्झाय} बोलने से पूर्व विधि सम्मत परम्परानुसार तीन नवकार व तीन करेमि भंते बोलना तय किया गया।

109. नवपद के दिनों में गायन वाली सज्झाय बोल सकते हैं।

110. चैत्र सुदि 5 व आसोज सुदि 5 को असज्झाय निक्षेप विधि अवश्य करनी है।

111. साध्वीजी भगवंत में रजोहरण की डांडी चौरस व गोल, दोनों प्रकार की परम्परा दिखाई देती है। विचार–विमर्श कर निर्णय किया गया कि साध्वीजी म. के रजोहरण की डांडी साधुओं की भांति गोल ही होगी।

112. समाचारी शतक की 65वीं समाचारी में खरतरगच्छ का एक सर्वमान्य व्यवस्थापत्रक दिया है। इसमें कुल 33 बोल हैं। इसके 22वें बोल में लिखा है–

व्याख्यानारम्भे गच्छाधिपतेः नमस्कारकथनं प्रतिक्रमणे तन्नामकथनं च।।22।।

इस पाठ के आधार पर तय किया गया कि समुदाय के समस्त साधु–साध्वी व्याख्यान के प्रारंभ में नामस्मरण पूर्वक वर्तमान गच्छाधिपति को नमस्कार करें।

113. जन्म मृत्यु सूतक के बारे में विभिन्न मत–मतान्तर चलते हैं। इसलिये सूतक की एक व्यवस्था तय की गई। सूतक संबंधी पत्रक शीघ्र ही प्रकाशित कर पूरे भारत में वितरित किया जायेगा, ताकि गच्छ समुदाय की प्ररूपणा में समानता हो।

114. पंचमी पारिष्ठापनिका समिति के स्थान की बहुत बड़ी समस्या है। इस संबंध में यह तय किया गया कि साधु–साध्वी यथासंभव बहिर्भूमि की ही गवेषणा करें। परठने के संबंध में ध्यान रखें कि शासन की हीलना किसी भी कीमत पर न हो। खुली जगह प्राप्त न होने की स्थिति में स्व विवेक से निर्णय करें। शौचालय का उपयोग होने पर प्रायश्चित्त का विधान किया गया है।

समस्त खरतरगच्छ श्री संघों को आदेश

115. हर संघ में देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, साधारण द्रव्य आदि का हिसाब व्यवस्थित रूप से रखा जाना अनिवार्य है। यदि फिक्स डिपोजिट किया जाना है तो अलग अलग खाते की अलग–अलग जमाबंदी होनी चाहिये। यदि एक साथ हो तो हर खाते की राशि का ब्याज उसी खाते में जोड़ा जाना चाहिये।

देवद्रव्य बैंकों में फिक्स डिपोजिट रखने की प्रवृत्ति को समाप्त किया जाना चाहिये। क्योंकि बैंकों द्वारा उस द्रव्य का दुरूपयोग प्रत्यक्ष देखा जाता है। अतः देवद्रव्य का उपयोग शीघ्रातिशीघ्र जीर्णोद्धार आदि में कर लेना चाहिये।

116. परमात्म भक्ति या दादा गुरुदेव की भक्ति से संबंधित जो भी रात्रि में भक्ति का आयोजन होता है; देखा जाता है कि उसमें रात्रि भर संगीत का कार्यक्रम चलता है और उसमें उपस्थित लोगों को चाय, कॉफी, नाश्ता आदि कराया जाता है। यह सर्वथा वीतराग प्रभु की आज्ञा के विरूद्ध है। अतः निर्णय किया जाता है कि रात्रि भक्ति में पानी के सिवाय अन्य खाद्य या पेय पदार्थ का प्रयोग सर्वथा निषिद्ध रहेगा।

117. धार्मिक समारोहों में भी रात्रि में मिष्ठान्न आदि का निर्माण देखा गया है। यह उचित नहीं है। क्योंकि रात्रि में निर्मित पदार्थ का भोजन, रात्रि भोजन की श्रेणी में ही आता है। अतः कैसा भी... कहीं भी धार्मिक समारोह हो, सूर्यास्त के बाद भोजन का निर्माण सर्वथा निषिद्ध है।

118. प्रश्न है कि भगवान की प्रतिमा के सामने दादा गुरुदेव या गुरु भगवंतों को वंदन किया जा सकता है या नहीं?इस प्रश्न का शास्त्र–सम्मत समाधान है कि जिन मंदिर में परमात्मा के समक्ष दादा गुरूदेव की प्रतिमाओं की पूजा, वंदना, आरती आदि विधि करने में किसी भी प्रकार का कोई दोष नहीं है। हाँ, पहले परमात्मा की वंदना, पूजा आदि होगी, उसके बाद में गुरूदेव की होगी। नवकार महामंत्र इसका प्रबल प्रमाण है। परमात्मा के सामने ही नमो आयरियाणं आदि पद बोले जाते हैं, जो साधु पद के वाचक है। इस संबंध में कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य महाराज योगशास्त्र के तीसरे प्रकाश में फरमाते हैं–**ततो गुरूणामभ्यर्णे,**

प्रतिपत्तिपुरःसरम्। विदधीत विशुद्धात्मा, प्रत्याख्यान–प्रकाशनम्।।125।। व्याख्या– ततो नन्तरं गुरूणां–धर्माचार्याणां देववंदनार्थमागतानां स्नात्रादिदर्शने, धर्मक्रियार्थं तत्रैव स्थितानां अभ्युत्थानं, तदालोके अभियानं च तदागमे शिरस्यंजलिसंश्लेषः स्वयमासनढौक–नम्।।125।। आसनाभि ग्रहो भक्त्या, वंदना पर्युपासनम्। तद्यानेनुगमश्चेति, प्रतिपत्तिरियं गुरोः।।127।।

परमात्मा के मंदिर में गुरूभगवन्तों के आगमन पर उनकी भक्ति वहाँ स्थित श्रावकों द्वारा कैसे करनी चाहिये, इसका खुलासा आचार्य भगवन्त फरमा रहे हैं। इन गाथाओं में स्पष्ट लिखा है कि जिन मंदिर में गुरू महाराज के आने पर सामने जाकर उनसे आसन आदि ग्रहण कर विधिवत् वंदना, उपासना करनी चाहिये।

119. आचार्य जिनहरिसागरसूरि ने 11वें प्रस्ताव के अनुसार देवसिक प्रतिक्रमण में श्रावकों के लिये अड्ढाईज्जेसु सूत्र बोलने का निषेध किया है।

120. नींबू सत एक निकृष्ट पदार्थ है, अतः इसका उपयोग वर्जित है।

121. बरक का निर्माण मशीनों से होने लगा है, ऐसा सुना जाता है। परन्तु परम्परागत रूप से इसका निर्माण हिंसा का निमित्त है। अतः बरक का उपयोग मंदिर में, आंगी आदि में, महापूजन में, भोजन आदि में सर्वत्र वर्जित है।

122. इक्षु रस से परमात्मा का प्रक्षाल यदि किया जाता है, तो वहाँ पूरी सफाई नहीं हो पाती। परिणामतः मिठास के कारण चींटियाँ आती हैं जिससे हिंसा की प्रायः पूरी संभावना रहती है। अतः इक्षु रस से प्रक्षाल वर्जित किया गया है।

123. वरघोड़े में पानी के सिवाय अन्य पेय या खाद्य पदार्थों का उपयोग सर्वथा वर्जित है।

124. वंदित्तु सूत्र बोलते समय 42 गाथा पूर्ण होने पर तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स बोलने का रिवाज है। शास्त्र पाठ, परम्परा आदि के आधार पर यह तय किया गया कि यह पाठ श्रावक श्राविका न बोलें।

गच्छ के पूर्वज आचार्य श्री जिनपतिसूरि ने अपनी 51वीं समाचारी में स्पष्टतः मना किया है–

सावयपडिक्कमणासुत्तंते तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स इति न भणंति।।51।।

125. श्रावक मंदिर, उपाश्रय में प्रवेश करे, तब तीन बार निसीहि का उच्चारण करे। पर बाहर निकलते समय आवस्सहि का उच्चारण तो पौषधधारी श्रावक ही कर सकता है, सामान्य श्रावक नहीं। इस प्रकार का पाठ आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरि द्वारा रचित पट्टक के 20वें बोल में प्राप्त होता है–

उपाश्रय नीकलतां खुलु श्रावक आवस्सही न करे, पोसहतो सामयिकधर कहे, देहरे निकलतां आवस्से कहण प्रयोजन को नहीं।

126. नौकारसी आदि के पच्चक्खाणों में श्रावकों के लिये पाणस्स लेवेण वा का छह आगारों वाला पाठ निषिद्ध है। यह पाठ केवल पंच महाव्रतधारी साधु–साध्वियों के लिये है। प्रत्याख्यान भाष्य और उसकी वृत्ति में स्पष्ट रूप से लिखा है– **एते पानकागारा यतीनामेव, न तु श्राद्धानां, न खलु श्राद्धाः सर्वविरतयः इति।** इस संबंध में आचार्य जिनपतिसूरि ने अपनी 12वीं समाचारी में लिखा है–

सावगाणं पाणस्स लेवाडेण वा इच्चाइ पाणगागार अणुच्चारणं।।12।।

श्रावक समाचारी

127. गुरु भगवंतों की अनुपस्थिति में श्रावक वर्ग जब पाक्षिक प्रतिक्रमण करता है, तब पाक्षिक सूत्र के स्थान पर वंदित्तु सूत्र बोलने का विधान है। करेमि भंते. इच्छामि पडिक्कमिउं. बोलकर जिसने वंदित्तु का आदेश लिया है, वह आगे आकर दो खमासमणों से संदिसाउं व कड्ढूं बोले। दूसरा श्रावक तस्सउत्तरी. व अन्नत्थ. बोले। सभी कायोत्सर्ग मुद्रा में वंदित्तु सूत्र का पाठ श्रवण करें। आचार्य जिनचन्द्रसूरि के पट्टक के 9वें बोल के अनुसार उस समय वंदित्तु सूत्र के **'तं निंदे तं च गरिहामि'** तक अर्थात् 42 गाथा पर्यन्त ही बोलना चाहिये–

पाखीरे पडिकमणे श्रावक पाखीसूत्र वंदित्तु गुणतां तं निंदे तं च गरिहामि एतला सीम गुणे 'अब्भुट्ठियोमि आराहणाए' ए चूलिका न गणे।

128. जिन मंदिर व उपाश्रयों में पंखा न लगायें।

129. उपाश्रय में जब गुरु महाराज से चर्चा विचारणा चल रही हो, तब उनके सामने मोबाईल का उपयोग करना अविनय है। अतः उस समय मोबाइल का

त्याग हो।

130. हर गांव में प्रतिदिन एक आयंबिल हो, ऐसी व्यवस्था हो।

131. कोई श्रावक सूर्यास्त के पश्चात् भोजन करके यदि प्रतिक्रमण करना चाहता है तो वह नहीं कर सकता।

132. श्रावक–श्राविकाएं यदि उपवास से पौषध नहीं कर पाते हैं तो वे जयणा व्रत कर सकेंगे। इस व्रत में दो समय प्रतिक्रमण करना, कम से कम एकासण तप, नवकार की दो माला, कुल 12 सामायिक करनी होगी। सामायिक पार कर एकासन कर सकेंगे। उस दिन सचित्त स्पर्श का त्याग होगा। वेशभूषा सामायिक की होगी।

133. हर श्रावक प्रतिदिन एक माला नवकार मंत्र की अनिवार्य रूप से फेरे।

134. गच्छ के हर परिवार को चाहिये कि वह अपने बालक–बालिकाओं को ज्ञान–शाला अवश्य भेजें, स्वयं भी जाएं एवं गच्छीय परम्परानुसार सूत्र व विधियाँ सीखें।

135. हर रविवार को या सुविधानुसार किसी और वार को श्रावक व श्राविका वर्ग द्वारा उपाश्रय में सामूहिक सामायिक का आयोजन हो।

136. साधर्मिक सहयोग {शिक्षा, चिकित्सा आदि हेतु} के लिये आयोजन करना।

137. जिन मंदिरों, दादावाड़ियों के साथ–साथ संस्कारी शिक्षा मंदिरों का अधिक से अधिक निर्माण करना व सुव्यवस्थित रूप से संचालित करना।

138. चातुर्मास काल तथा विहार में पूज्य साधु–साध्वी भगवंतों के वैयावच्च आदि के विषय में जागरूकता का सतत विकास करना।

139. कच्चे दही, छाछ के साथ द्विदल का उपयोग न करें। समाचारी शतक की 12वीं समाचारी में दिये गये शास्त्रीय प्रमाणों से स्पष्ट है कि मेथीदाना, कुमटिया व सांगरी द्विदल हैं। अतः चना, मूंग, मोठ आदि की तरह इनका भी कच्चे दही व छाछ के साथ उपयोग न करें।

140. डिस्पोजेबल वस्तुओं का उपयोग बिल्कुल न हो।

141. संघ, संस्था, जिनमंदिर आदि के ट्रस्टी पद की न्यूनतम योग्यता का शास्त्रानुसार निर्धारण होना चाहिये।

142. श्री संघ में संघ संबंधी पारस्परिक विवाद आपसी संवाद से या गुरु भगवंतों की प्रेरणा से समाप्त किये जाये। कोर्ट में जाने से संघ की प्रतिष्ठा को क्षति पहुँचती है।

143. कोई भी श्रावक या श्राविका स्वगच्छीय या परगच्छीय किसी भी साधु साध्वी की निंदा पेंपलेट, वाट्सअप आदि किसी भी माध्यम से न करें। कोई भी अनुचित आचरण दिखने पर उस श्रावक या श्राविका को चाहिये कि वह इसकी पूरी जानकारी मात्र गच्छाधिपति आचार्यश्री को दें। आगे की कार्यवाही की जिम्मेदारी गच्छाधिपति आचार्यश्री की होगी।

144. एक साथ दो सामायिक ले सकेंगे। करेमि भंते बोलते समय जाव नियमं पाठ बोलते समय अपने चित्त में दो सामायिक का संकल्प लेना होगा।

145. सामायिक में गुरुवंदन किया जा सकता है।

146. सामायिक स्थित श्रावक या श्राविका गुरु भगवंत के पधारने पर उन्हें गोचरी नहीं वहोरा सकता।

147. सामायिक स्थित श्रावक या श्राविका वासचूर्ण से ज्ञान पूजा या गुरु पूजा नहीं कर सकते।

148. सामायिक स्थित श्रावक या श्राविका रूपये को स्पर्श नहीं कर सकते। रूपयों की प्रभावना नहीं ले सकते।

149. अपने घरों में आती पत्रिकाओं, पंचांग आदि सामग्री को ऐसी कम्पनी में दें, जहाँ उनसे पुनः कागज का निर्माण होता है।

150. साधु–साध्वियों का सम्मेलन हर पांच वर्ष में करना निश्चित किया गया।

151. इस नियमावली में परिवर्तन/परिवर्द्धन का अधिकार पूज्य गच्छाधिपतिजी को ही होगा। वे प्रवर पर्षदा से विचार–विमर्श कर परिवर्तन/परिवर्द्धन कर सकेंगे।

(गच्छाधिपति आचार्य जिनमणिप्रभसूरि)

सम्मेलन के दौरान ता. 12 मार्च 2016 को

पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा घोषित चातुर्मास

पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसागरसूरिजी म.	दुर्ग
पू. उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म.	बालोतरा
पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.	पालीताना
पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.	बाडमेर, सांचोर, चौहटन, पाटन
पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म.	इचलकरंजी
पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.	सूरत शीतलवाडी उपाश्रय, नंदुरबार, खेतिया
पू. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.	पालीताना
पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.	
पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	दुर्ग महासमुंद
पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म.	सूरत
पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.	जोधपुर बाडमेर भवन
पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.	शंखेश्वर तीर्थ दादावाडी
पू. साध्वी श्री प्रीतिसुधाश्रीजी म.	बड़ौदा
पू. साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म.	बैंगलोर
पू. साध्वी श्री संयमज्योतिश्रीजी म.	ब्यावर
पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म.	जोधपुर
पू. साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म.	दिल्ली छोटी दादावाडी
पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.	दिल्ली शहर
पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म.	मुंबई खरतरगच्छ संघ
पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म.	इन्दौर
पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म.	नवसारी
पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.	तलोदा
पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.	पालीताना
पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.	भुज
पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म.	बुढा (कवीन्द्र नगर)

सम्मेलन गीतिका

तर्ज : भला किसी का...

खरतरगण के नभ में स्वर्णिम उदित हुआ है सूरज आज।
बढे एकता अनुशासन ये, सबके अन्तर की आवाज।।टेर।।

सम्मेलन शुभ शुरू हुआ अब हो आवश्यक परिवर्तन।
प्राप्त करे गच्छ नई उँचाई मिलकर करना है चिंतन।।
उतर आयेगा इस पृथ्वी पर स्वर्ग लोक का सुन्दर राज,
बढे एकता.।।1।।

आपस में हम करें समन्वय यह संकल्प हमारा है।
स्वार्थ त्याग से पूर्ण समर्पण यही हमारा नारा है।
सुखसागर की दिव्य कृपा से बन जाते बिगडे सब काज,
बढे एकता.।।2।।

उठो बढो ओ विरतिधारी नया भविष्य तुम्हारा है।
प्रभुवर की आज्ञा से हमने अपना हृदय संवारा है।
गुरुवर की आज्ञा से हमने अपना हृदय संवारा है।
मणिप्रभ को गच्छ के मुनिमंडल श्रमणी गण पर पूरा नाज,
बढे एकता.।।3।।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. ने पालीताना से विहार किया है। वे सूरत होते हुए भिवंडी पधारेंगे। वहाँ से विहार कर पुनः नवसारी, सूरत होते हुए राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

पूज्य गणिवर श्री मणिरत्नसागरजी म. पालीताना से विहार कर अहमदाबाद पधारे हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

पूज्या महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना श्री जिन हरि विहार में बिराजमान है।

पूज्या प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना बाबु माधोलाल धर्मशाला में बिराजमान है। योगोद्वहन की पूर्णाहुति के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

पूज्या गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म.

आदि ठाणा पालीताना जिन हरि विहार में बिराजमान है। योगोद्वहन की पूर्णता के पश्चात् महाराष्ट्र व दिल्ली की ओर विहार करेंगे।

पूज्या गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना जिन हरि विहार में बिराजमान है। योगोद्वहन की पूर्णता के पश्चात् गुजरात व खानदेश की ओर विहार करेंगे।

पूज्या साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा शिवपुरी से विहार कर अशोकनगर पधारे, वहाँ आपकी निश्रा में जिन मंदिर पर ध्वजा चढाई गई। वहाँ से गुना पधारे, वहाँ पर भी ध्वजारोहण समारोह हुआ। वहाँ से ता. 5 अप्रेल को शिवपुरी की ओर विहार किया है। जहाँ पू. तपस्वी साध्वी श्री वसुन्धराश्रीजी म. एवं साध्वी श्री पुण्यधराश्रीजी म. के वर्षीतप का पारणा संपन्न होगा।

पूज्या साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. मालपुरा बिराज रहे हैं। वहाँ से विहार कर जयपुर पधारेंगे। जहाँ ता. 8 व 9 अप्रेल मोतीडूंगरी दादावाडी बिराजेंगे। ता. 10 को शिवजीराम भवन में प्रवेश होगा।

पूज्या माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना जिन हरि विहार में बिराजमान है। योगोद्वहन की पूर्णता के पश्चात् छत्तीसगढ की ओर विहार करेंगे।

पूज्या साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना जिन हरि विहार में बिराजमान है। योगोद्वहन की पूर्णता के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

पूज्या साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना जिन हरि विहार में बिराजमान है। योगोद्वहन की पूर्णता के पश्चात् शंखेश्वर तीर्थ की ओर विहार करेंगे।

पूज्या साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना जैन भवन में बिराजमान है। योगोद्वहन की पूर्णता के पश्चात् दिल्ली की ओर विहार करेंगे।

पूज्या साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा 6 पालीताना से योगोद्वहन की पूर्णता के पश्चात् लगभग 20 अप्रेल के आसपास विहार करेंगे। वे अहमदाबाद होते हुए श्री केशरियाजी पधारेंगे। जहाँ पूज्य साध्वी श्री प्रियदर्शांजनाश्रीजी म. के वर्षीतप का पारणा होगा। तथा वहाँ कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट द्वारा आयोजित सामूहिक वर्षीतप पारणा समारोह को अपनी निश्रा प्रदान करेंगे।

पूज्या साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 पालीताना से विहार कर अहमदाबाद पधारे। वहाँ से बाडमेर की ओर विहार किया है। उनके वर्षीतप के पारणे बाडमेर कुशल वाटिका में संपन्न होंगे।

पू. साध्वी श्री मृदुलाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 ने पालीताना से ता. 27 मार्च को विहार किया है। वे शंखेश्वर पधारेंगे। वहाँ से जयपुर की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा ने पालीताना से ता. 27 मार्च को विहार किया है। वे शंखेश्वर होते हुए पाटण पधारेंगे।

पूज्या साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना जिन हरि विहार में बिराजमान है। योगोद्वहन की पूर्णता के पश्चात् इन्दौर की ओर विहार करेंगे।

पूज्या साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना जिन हरि विहार में बिराजमान है। योगोद्वहन की पूर्णता के पश्चात् सूरत नवसारी की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री मित्रांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 ने पालीताना से सूरत की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी श्री भाग्योदयाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 ने पालीताना से रतलाम की ओर विहार किया है।

साध्वी श्री विज्ञांजनाश्रीजी डॉक्टरेट उपाधि से विभूषित

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विज्ञांजनाश्रीजी म. को डॉक्टरेट की उपाधि से विभूषित किया गया।

यह उपाधि उन्हें उनके द्वारा 'श्रीमद् देवचन्द्र चौवीसी : एक अध्ययन' विषय पर लिखे गये शोध प्रबन्ध पर दी गई। 3 अप्रेल 2016 को सिद्धाचल की पावन भूमि पर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में जैन विश्वविद्यालय की ओर से जोधपुर निवासी डॉ. श्री धर्मचन्द जैन द्वारा मौखिक परीक्षा लिये जाने के बाद यह उपाधि प्रदान की गई। पू. साध्वीश्री ने डॉ. श्री जितेन्द्र भाई बी. शाह के मार्गदर्शन में यह शोध प्रबन्ध लिखा।

डॉ. श्री धर्मचंद जैन व डॉ. जितेन्द्र बी. शाह ने कहा– इस शोध प्रबन्ध को देखने से ज्ञात होता है कि साध्वीजी म. ने इस ग्रन्थ के लेखन में बहुत मेहनत की है। इस अवसर पर पूज्यश्री ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा– खरतरगच्छ में आज एक डॉक्टरेट पद प्राप्त होने पर गौरव का अनुभव है। साध्वीजी ने पूर्ण मनोयोग के साथ श्रीमद्जी का अभ्यास किया है।

पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने कहा– आज मेरी वर्षों की इच्छा पूरी होने जा रही है। प्रिय शिष्या साध्वी विज्ञांजना की इच्छा विज्ञान से संबंधित किसी विषय पर शोध करने की थी। पर मेरी इच्छा थी कि शोध ऐसे विषय पर हो, जो उसकी आत्मा के लिये हितकर हो। इसलिये मैंने उसे श्रीमद्जी पर काम करने का आदेश दिया। चूंकि श्रीमद् देवचन्द्र मेरी आस्था के केन्द्र हैं। इसलिये आज इस विषय पर शोध प्रबन्ध की पूर्णता और डॉक्टरेट रूप उपाधि प्राप्ति की इस फलश्रुति से मेरा मानस अत्यन्त प्रसन्न है। साध्वी विज्ञांजनाश्रीजी ने इस शोध प्रबन्ध के लेखन–काल के संस्मरण सुनाये। उन्होंने कहा– मैंने जो भी लिखा है, वह गुरुजनों की कृपा का ही परिणाम है। उन्होंने अपने सांसारिक पिता श्री रतनलालजी का स्मरण कर उनके योगदान की सराहना की। इस अवसर पर साध्वी मंडल की ओर से महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि समस्त साध्वी मंडल की ओर से साध्वी डॉ. श्री विज्ञांजनाश्रीजी म. को कामली ओढाकर अपनी शुभकामना व आशीर्वाद दिया। साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. ने गीतिका के माध्यम से बधाई अर्पण की। प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ने साध्वीजी महाराज के परिश्रम की भूरि भूरि सराहना की। इस अवसर पर श्री जिनहरिविहार ट्रस्ट मंडल के महामंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया ने डॉ. श्री धर्मचंदजी जैन व डॉ. श्री जितेन्द्र बी. शाह का अभिनंदन किया।

भारत भर में आचार्यश्री के जन्म दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. के 57वें वर्ष प्रवेश के अवसर पर पूरे भारत में स्थान स्थान पर जीवदया, भक्ति, पूजा आदि के विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् ने स्थान स्थान पर आयोजन किये।

प.पू. गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसागरसुरिश्वरजी म.सा. के 57 वें जन्म दिवस फागण सूद 14 दि. 22 मार्च 2016 के अवसर पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की विभिन्न शाखाओं द्वारा धार्मिक, सामाजिक एवं जीवदया के कई कार्यक्रम आयोजित किये गए।

- अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद कोट्टुर शाखा द्वारा आयोजित:- कोट्टुर जैन संघ के सभी महिला द्वारा सुबह 10:30 को सामूहिक सामायिक चौदस प्रतिक्रमण 6.30 बजे एवम् कोट्टुर सरकारी, प्राइवेट हॉस्पिटल में सभी मरीजों को फ्रूट वितरण किया गया
- अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद दिल्ली शाखा द्वारा आयोजित:- श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद के तत्वावधान में मानव सेवा की श्रृंखला में वल्लभ स्मारक के समीप स्थित ''अपनाघर आश्रम'' (महिला सदन), बुढपुर, अलीपुर, जी.टी. करनाल रोड़, में भोजन व फल वितरण किया गया।
- अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् मुंबई शाखा द्वारा आयोजित:- जन्मदिवस की पूर्वसंध्या पर भक्ति भावना 22/3/16 प्रात: पाठशाला के बालको के साथ श्री शांति स्नात्र पूजन, दोपहर में सामायिक एवं शाम 6:30 चौदस प्रतिक्रमण
- अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद रिंगनोद शाखा द्वारा आयोजित:- अनाथाश्रम के बच्चों के साथ गुरूदेव का जन्मदिवस मनाया। सभी बच्चों को चॉकलेट एवं बिस्कुट वितरित किये।
- अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद सिकंदराबाद शाखा द्वारा आयोजित:- गौशाला में पशुओं के लिए चारे का प्रबंध किया, पक्षियों को दाना दिया गया एवं जरूरतमंदों को भोजन तथा मिठाई का वितरण किया।
- अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद बालोतरा शाखा द्वारा आयोजित:- जीवदया के विभिन्न कार्य किये गए सभी पशुओं को घास-चारा खिलाया, कबूतरों को अनाज दिया गया।
- श्री मणिधारी युवा परिषद् मुंबई द्वारा दो गायों को आजीवन के लिए गोद लिया गया गायों के सम्पूर्ण जीवन पर्यंत का खर्च परिषद् द्वारा वहां किया जायेगा।

तत्त्व परिक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 117

प्रस्तुत पहेली में A और B, दो विभाग दिये गये है। A में ग्रंथ/शासत्र/आगम का नाम है, B में ग्रन्थ आदि का विषयोल्लेख है। मुश्किल यह है कि A और B दोनों में विषमता आ गयी है। अत: A कॉलम के सम्मुख जो खाली कॉलम है, उसमें ग्रन्थ विषय से सम्बद्ध ग्रन्थ को अंकित करो

A	A में से सही ग्रन्थ का नाम यहाँ अंकित करो।	B
1. कल्पसूत्र		परमात्मा वीर के दस महा श्रावक
2. संवेगरंगशाला सूत्र		साधु-जीवन-चर्या
3. पंचलिंगी प्रकरण		कर्म की आठ प्रकृतियाँ
4. उपासक दशांग सूत्र		गौचरी के बयालीस दोष
5. जीवाभिगम सूत्र		जम्बूद्वीप का वर्णन
6. दशवैकालिक सूत्र		खरतरगच्छ की परम्परा
7. ज्ञातधर्मकथा सूत्र		चौबीस द्वार में चौबीस दण्डक
8. उत्तराध्ययन सूत्र		निर्वेद-प्राप्ति का रास्ता
9. जबद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र		विविध तीर्थों का वर्णन
10. सूत्रकृतांग सूत्र		मीमांसक आदि दर्शनों का वर्णन
11. खरतरगच्छ वृहद गुर्वावली		जैन संस्कार की सोलह विधियाँ
12. कम्मपयडी		चार तीर्थकरों का जीवन-चरित्र
13. प्रवचन सारोद्धार		चार चीजें जगत में दुर्लभ हैं।
14. दण्डक प्रकरण		पदारोहण आदि विधियाँ

15. विविधतीर्थकिल्प		अनेकान्तवाद की प्ररूपणा
16. पिण्डविशुद्धि प्रकरण		365 पाखंडियों का वर्णन
17. षड्दर्शन सम्मुचय		द्रौपदी द्वारा जिनप्रतिमा पूजा
18. स्याद्वाद मंजरी		विविध विषयों का विश्लेषण
19. विधि मार्ग प्रपा		जीव तत्त्व का विवेचन
20. आचार दिनकर		सम्यक्त्व के पांच लक्षण

जहाज मन्दिर पहेली का उत्तर पोस्ट कार्ड पर लिखकर भेजे।

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा : श्री सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन
मुम्बई-400004 (महा.) मो. 98693 48764

नियम

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 मई तक पहुँचना जरुरी है।
2. विजेताओं के नाम व सही हल जून में प्रकाशित किये जायेंगे।
3. प्रथम विजेता को 200 रू. का और 100-100 रु. के चार तथा 50-50 रुपये के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. ग्यारह विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
7. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
श्री धनराजजी-सुनीतादेवी, उज्ज्वल, गीतांजली, प्रांजल कोचर
तलोदा (फलोदी)

बडी दीक्षा संपन्न

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में पूज्य साध्वी डॉ. श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी डॉ. श्वेतांजनाश्रीजी म. की शिष्या पू. बाल साध्वी श्री प्राज्ञपूर्णाश्रीजी म. को ता. 31 मार्च 2016 को बडी दीक्षा प्रदान की गई। इस अवसर पर सभी साधु साध्वीजी भगवंतों ने वासचूर्ण से एवं श्री संघ ने अक्षतों से बधाया।

अनमोल वचन

— सच्ची श्रद्धा और सम्पूर्ण समर्पण, ये दो ऐसे द्रव्य है जो दादा को चढ़ाने पर जीवन में आनंद और शांति की रसधार बहने लगती है ।

— मणिधारी दादा जिनचन्द्रसूरि ऐसे अनोखी चमक वाले खरतरगच्छाचार्य थे, जिन्होंने छोटी उम्र में सम्राटों को प्रतिबोध देकर महावीर प्रभु के पथ का अनुगामी बनाया था ।

जहाज मंदिर पहेली - 115 का सही उत्तर

1. मानतुंग	1. कल्पसूत्र
2. नमस्कार	2. तार्थंकर
3. उपधान	3. अरणिक
4. मदपान/ द्वैपायन	4. करकण्डु
5. देवानन्दा	5. कल्पवृक्ष
6. चन्द्रानन	6. आवश्यक
7. अगंधन	7. उत्कालिक
8. प्रत्याख्यान	8. पुंडरिक
9. अनशन	9. कल्याणक
10. अभ्याख्यान	10. गौशालक
11. जिनचन्द्र	11. एकलव्य

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- फीणी बेन बाफना, कोटुर

चार पुरस्कार - सीमा जैन-जयपुर, कमलेश भण्डारी-जयपुर, मंधु जैन-ऊटी, किरण बैद मुथा-रायपुर

छह पुरस्कार - सीमा भंडारी-ब्यावर, पिस्ता गोलेच्छा-जयपुर, सरसलता जैन-दिल्ली
पुष्पलता भंडारी-जयपुर, प्रेमदेवी दुगड़-जयपुर, कस्तुरचन्द चतुरमुथा-नयापुरा (उड़ीसा)

इनके उत्तर पत्रक सही थे- नमित्ता जैन-उदयपुर, निर्मला जैन-उदयपुर, नीरज जैन-उदयपुर, निर्मलादेवी संकलेचा-हैद्राबाद, मांगीलाल बोहरा-तलोदा, कुशल जैन-तिरपातुर, चेतना बच्छावत-अजमेर, चंदा गोलछा-धमतरी, मनीला पारख-जयपुर, चन्द्रप्रकाशजी जैन-जयपुर, चन्द्रसिंह जैन-उदयपुर, चन्द्रा कोचर-भाईंदर, मनीषा लुणावत-ऊटी, पुष्पा देवी-ब्यावर, संगीता गोलछा-कोण्डागांव, नव्या जैन-जयपुर, जयश्री कोठारी-भाईदर, रश्मि संचेती-राजनांदगांव, सुशीला भन्डारी-कोटा, सरला गोलछा-लालबर्रा, मिनाक्षी संकलेचा-अक्कलकुवा, मनोहरलाल झाबक-कोटा, भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, शिक्षा छाजेड़-बून्दी, स्वरूपचंद जैन-जयपुर।

पूज्यश्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा पालीताना से चैत्री पूर्णिमा के पश्चात् विहार कर सुरत होते हुए धूले पधारेंगे।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री जलगांव आदि क्षेत्रों की स्पर्शना करते हुए दुर्ग नगर में चातुर्मास हेतु ता. 10 जुलाई 2016 को मंगल प्रवेश करेंगे।

संपर्क : पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़, पो. पालीताना-364270 (गुजरात)
फोन- मुकेश-98251 05823, 9784326130, mail- jahajmandir99@gmail.com

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर की पत्नी अपने आचार और विचार से जटाशंकर से कम न थी। दोनों के सम्मेलन से लोगों को वह कहावत याद आ गई- दो घर बिगडता एक ही घर बिगडा!

उसे पापड बनाने आते न थे। पर बनाने जरूरी थे। वह किसी के सामने यह स्वीकार न सकती थी कि मुझे पापड बनाने नहीं आते।

बहुत सोच कर वह पडौसन के पास गई। उसने बातों में घुमावदार मोड पैदा करते हुए कहा- हमारे देश में तो पापड बनाने का तरीका थोडा दूसरा है। पर तुम्हारे यहाँ क्या तरीका है!

पडौसन ने सहज भाव से कहा- हमारे यहाँ पापड बनाने का तरीका एक ही है। जिसके पापड बनाने हों, उसे पीसना होता है।

-अच्छा- तो आपके यहाँ पीस कर बनाते हैं। वैसे मुझे तो यह मालूम ही है।

पडौसन को उसकी भाषा अजीब लगी।

दूसरे दिन फिर वह पडौसन के पास पहुँची और पूछा- आटा बनाने के बाद उसे क्या करना होता है!

पडौसन ने कहा- उसे अच्छी तरह गूंथना होता है।

-अच्छा! यह तो मुझे मालूम ही है।

तीसरे दिन फिर उसके पास जाकर पूछा- गूंथने के बाद आपके यहाँ क्या किया जाता है!

पडौसन ने कहा- उसका लोया बनाना होता है।

-अच्छा! लोया बनाना तो मुझे मालूम ही है।

पडौसन को लगा- यह पूछती भी है। और यह भी कहती है कि मुझे मालूम है। बडी अजीब महिला है।

बाद में उसने फिर पूछा- लोया का क्या किया जाता है आपके यहाँ!

पडौसन ने कहा- उसे बेलना होता है। गोल गोल बेलकर उसे पापड का रूप देना होता है। फिर उसे सुखाना होता है।

-अच्छा! यह तो मुझे मालूम ही है।

अगले दिन फिर वह पहुँची पडौसन के यहाँ और पूछा- सुखाने के बाद क्या किया जाता है!

पडौसन उसके सवालों से कम, उसके थोथे अहंकार से ज्यादा परेशान थी।

उसने कहा- सारे पापडों को समेट कर एक कोठी में डालना होता है और उसके बाद उसमें एक बाल्टी पानी डाल देना। बस! पापड तैयार हो जायेंगे।

- अच्छा! तो पानी एक बाल्टी डालना होता है। मुझे तो मालूम ही था। उसने अपने ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए कहा- हमारे यहाँ तो दो बाल्टी पानी डालना पडता है। तब जाकर जोरदार पापड तैयार होते हैं।

पडौसन मुस्कुरा उठी।

पापडों में ज्योंहि पानी डाला कि पापडों का तो लुगदा बन गया। वह भागी भागी पडौसन के पास पहुँची और कहा- पापडों का तो स्वरूप ही विचित्र हो गया।

पडौसन ने कहा- तुम तो कहती थी न कि मुझे सब मालूम है।

मिथ्या अहंकार का परिणाम ऐसा ही होता है। अज्ञान या अल्पज्ञान होने पर भी अपने आपको ज्ञानी मानते हैं। यही समस्या की जड है।

श्री अखिल भारतीय

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

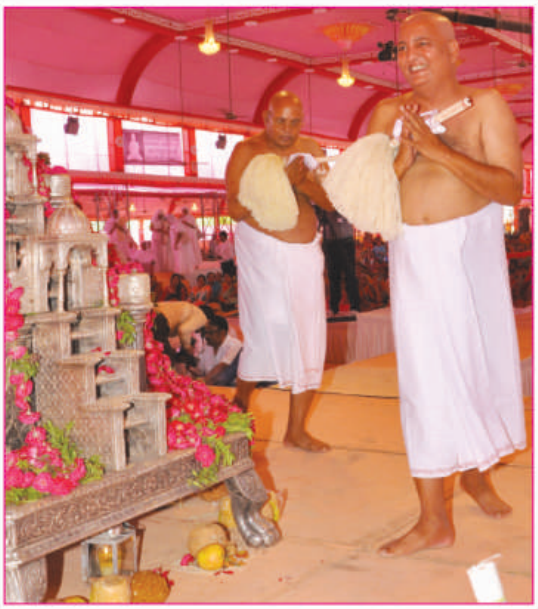

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408